पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एलएसपी/एल०डब्लू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२१, अंकः-४, अक्टूबर, सन्-२०१८, सं०-२०७५ वि०, दयानंदाब्द १९४, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११९; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन पर विशेष

आर्य सभ्यता-संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने के षड़यंत्र आज जोरों पर हैं!

गौरवशाली अतीत की तरह आर्य–जन संघर्ष के लिए सदा रहें सन्नद्ध

आन्दोलन को धारदार बनाने के लिए कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य का आर्य जनों से आह्वान

महाभारतकाल से उन्नीसवीं सदी तक भारत अनेक कुरीतियों, रूढ़िवादिता, धर्म व पूजा में विकृतियों, नारी जाति के अपमान को सहता रहा। सृष्टि के प्रारम्भ से ईश्वरीय ज्ञान 'वेद' लुप्तप्राय हो रहे थे जिससे सत्य सनातन वैदिक धर्म के स्थान पर अनेक मत तथा पन्थों के आविर्भाव से अन्धविश्वास बढ़ रहे थे। भारत ७५० वर्ष की इस्लामी गुलामी के पश्चात् यवनों के अत्याचार से ग्रस्त था। गुलामीकाल की विषम परिस्थिति में 'महर्षि दयानन्द' का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने देश की दयनीय अवस्था का गहन अध्ययन करके बड़ी दृढ़ता व सूझबूझ से साम्प्रदायिकता, अधर्म, रूढ़िवादिता, समाज में व्याप्त कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने का व्रत लिया, साथ ही गुलामी से भारत को स्वतंत्र कराने के निमित्त जन जागरण की योजना बनायी, इस प्रकार महर्षि ने चौमुखी लड़ाई लड़ी थी। चट्टान की तरह दृढ़ स्वामी जी ने 'वेद' के प्रचार-प्रसार का बीड़ा उठाया। 'वेद' धरती पर सुरक्षित है इसका ज्ञान लोगों तक पहुँचाया, उसके सही अर्थों का ज्ञान महर्षि से प्राप्त हुआ। कार्य बढ़ चुका था उसे क्रियान्वित करने के लिए सन् १८७५ ई. में उन्होंने बम्बई में 'आर्य समाज' की स्थापना की। उनकी घोषणा थी कि वह कोई नया धर्म, मत अथवा पन्थ नहीं चलाना चाहते, अनादिकाल से ईश्वर-प्रदत्त 'वेद' ज्ञान को आधार मानकर सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना आर्यसमाज का मुख्य दायित्व स्वामी जी ने निश्चित किया, आर्यसमाज कोई मत, पन्थ अथवा मजहब नहीं है। मजहब और धर्म के नाम पर उत्पन्न विषमताओं को दूर करने के लिए 'आर्यसमाज एक आन्दोलन' है।

विगत १४३ वर्षों में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने देश-विदेश में अनेक कष्टों को सहन करके धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्र में जो अद्वितीय कार्य किये हैं वह आर्यसमाज के इतिहास का स्वर्णिम काल है। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में इतिहास साक्षी है कि ८० प्रतिशत आर्यसमाजियो की एक बलिदानी गाथा है जिसके 'अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द' युगपुरुष हैं। इस इतिहास का स्मरण करके हमारा सबका माथा ऊँचा होता है।

सन् १९३९ में हैदराबाद राज्य की देशद्रोही नीतियों से त्रस्त जनता को मुक्ति दिलाने के लिए 'हैदराबाद सत्याग्रह' सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन प्रधान महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व में हुआ जिसमें २८ हजार आर्यवीरों ने भाग लिया था, जिसमें २५ आर्यवीर वीरगति को प्राप्त हुए थे, यह आन्दोलन अत्यन्त सफल रहा, जिसके समक्ष हैदराबाद निजाम की सत्ता को घुटने टेकने पड़े थे। इस आन्दोलन में भाग लेने वाले सत्याग्रहियों को भारत सरकार ने स्वतंत्रता सेनानी स्वीकार किया तथा पेंशन आदि की सुविधायें प्रदान कीं।

सन् १९५७ में पंजाब में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के निमित्त 'हिन्दी रक्षा सत्याग्रह' हुआ, अनेक आर्य शहीद हुए, अन्ततोगत्वा आर्यसमाज को सफलता मिली।

सन् १९६६ में सभा के नेतृत्व में, अन्य राष्ट्रीय संस्थाओं के समर्थकों तथा आर्य गौभक्तों ने 'गौरक्षा', के निमित्त उग्र आन्दोलन किया। हजारों लोग जेल गये और कई पुलिस की गोलियों के शिकार हुए। देश का दुर्भाग्य है कि भारत इस कलंक से आज भी उबर नहीं पाया।

महर्षि के काल में समाज में व्याप्त अंधविश्वास, जातिवाद, अन्य कुरीतियों के उन्मूलन के लिए महर्षि ने अपना बलिदान किया, उसका वीभत्स रूप आज देशभर में ताण्डव कर रहा है। लोग विधर्मी हो रहे हैं, प्रलोभन के माध्यम से धर्मपरिवर्तन उच्च शिखर पर है। ऐसी विकराल परिस्थिति में आर्यसमाज को, व आर्यों को संगठन की दृष्टि से एक होकर अपने अतीत की तरफ लौटना होगा। महर्षि के आह्वान 'मातृमान्, पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद' की शपथ लेनी होगी। स्वराज्य, स्वधर्म, स्वभाषा, गौरक्षा निमित्त आर्यों को पुनः कुर्बानी देनी होगी। अंधविश्वास, रूढ़िवाद, आतंकवाद जैसे समाज में व्याप्त अभिशापों से देश को मुक्त कराने हेतु आत्माभिमान, आत्मगौरव, स्वाभिमान को जागृत करना होगा। महर्षि ने मातृशक्ति पर हो रहे घोर अत्याचार के विरुद्ध वेदों के सही अर्थ में उन्हें शिक्षा प्राप्त करने तथा वेद-शास्त्रादि पढ़ने का अधिकार दिया। आज नारी शिक्षा प्राप्त कर रही है। संस्कृत के पठन-पाठन में वेद-शास्त्रों का अध्ययन करके विदुषी हो रही हैं, उच्च-सर्वोच्च पदों पर विराजमान हो रही हैं, किन्तु अंधकार में सोया हुआ समाज, पुरुष की तुलना में नारी को अबला बना रहा है। अर्थ की लालसा से ग्रसित बड़े-बड़े उद्योगपति तथा वर्तमान मीडिया, नारी के देवी स्वरूप को न दिखा कर उसे अश्लील विज्ञापनों के माध्यम से दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। भूत-प्रेत की कहानियों को दर्शा कर हमारे देश के चरित्र के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है, इसके अतिरिक्त भी तरह-तरह के साधनों से हमारी संस्कृति को नष्टप्राय करने का षड्यंत्र जोरों पर है, ऐसे में आर्यसमाज व आर्यों को आँखें खुली रखनी होंगी, देश व जाति को बचाने के लिए कारगर कदम उठाने होंगे। यह महती कार्य केवल नारों से पूरा नहीं होगा। आर्यों, जागो! उठो! और महर्षि के सपनों को साकार करने में अपनी आहुति दो। अब प्रश्न उठता है कि हम क्या करें, और कैसे करें? उस निमित्त कुछ सुझाव निम्नांकित हैं-

१. 'वयं राष्ट्रे जागृयाम' राष्ट्र और समाज के उन्नयन के लिए सतत जागृत रहते हुए श्रेष्ठतम कार्य करना चाहिए, उसकी उन्नति हम तन, मन, धन से करें।

२. महर्षि दयानन्द की मूलभाषा गुजराती थी, संस्कृत अध्ययन से उन्होंने वेदशास्त्रों का अध्ययन किया, किन्तु उन्होंने देश के कल्याणार्थ हिन्दी को अपनाया और अपने अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' को हिन्दी अर्थात् आर्यभाषा में लिखा। आज हिन्दी की हम सभी उपेक्षा कर रहे हैं। अंग्रेजी यवन राज्य के समय से कहीं अधिक बढ़ रही है। आज आवश्यकता है कि देश के मनीषी, विद्वान् और विशेषकर नवयुवक हिन्दी साहित्य को उच्चस्तर प्रदान करके उसे सुदृढ़ करें, हिन्दी के लिये आवाज उठायें।

३. वैदिक परम्परा के अन्तर्गत आर्ष गुरुकुलों को समृद्ध एवं आधुनिक बनाने के साथ-साथ उनके पाठ्यक्रम में एकरूपता लायें। बालक/बालिकाओं के उज्ज्वल चरित्र का निर्माण गुरुकुलीय शिक्षा ही कर सकती है और इसी से देश और जाति का उत्थान होना सम्भव होगा। संस्कृत-भाषा की सुदृढ़ता से आर्य संस्कृति बचेगी, शासन इस निमित्त उदास है, हमें इसके लिये चहुंदिश कार्य करना होगा। देशभर में योजनाबद्ध ढंग से वर्तमान की तकनीकी शिक्षा व प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा का संगम स्थापित करके नये गुरुकुल, प्रत्येक प्रान्तों में खोले जायें।

४. अनाथ आलयों को वर्तमान से जोड़ना होगा। आज का बच्चा अपने को अनाथ नहीं समझे, इस दृष्टिकोण से अनाथालयों का निर्माण होना चाहिए।

५. वैदिक साहित्य को समृद्ध करना नितान्त आवश्यक है। आर्यों की स्वाध्याय के प्रति उदासीनता को हटाना पड़ेगा, आर्य स्वाध्याय करें। स्वाध्याय से ही जीवन में निखार आयेगा और उनमें देश व समाज के प्रति जागरूकता आयेगी और उससे आर्यसमाज की उन्नति होगी।

६. युवक/युवतियों के चरित्र निर्माण व शारीरिक उन्नति के निमित्त प्रत्येक आर्यसमाज, शिक्षण संस्थाओं में आर्य वीर दल/आर्य वीरांगना दल अनिवार्य रूप से सुनियोजित ढंग से चलाने होंगे।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

विनय पीयूष

सब में प्रीति धरो!

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचꣳराजसु नस्कृधि।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्।।

(यजु. : 18/48)

प्रीति से मुझमें प्रीति धरो!

प्रीति धरो
ब्राह्मण, क्षत्रिय में,
वैश्य, शूद्र
जन-जन के हिग में,

प्रीति की सब में रीति धरो!
प्रीति से सब में प्रीति धरो।

काव्यानुवाद : अमृत खरे

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।

सम्पादकीय

आर्य संस्कृति पर प्रहार पर प्रहार

समलैंगिकता को निरपराध की श्रेणी में लाये जाने पर सत्तारूढ़ और विपक्षी दलों के शान्त, सन्तुष्ट और निरान्दोलित बने रहने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं, यह बात आसानी से समझ में आने वाली नहीं है; किन्तु गंभीरतापूर्वक अन्तर्निहित प्रवृत्तियों का सूक्ष्म अध्ययन और विश्लेषण करने पर संभव है विचारशील व्यक्ति कुछ अनुमान लगा सकें। 'आर्य लोक वार्ता' के गतांक में कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य ने एक वक्तव्य द्वारा इस मनोवृत्ति को हिन्दुत्व तथा हिन्दू समाज के लिए विनाशकारी षडयंत्र बताचया है, जिस पर प्रत्येक आर्य हिन्दू को गहराई से चिन्तन करना होगा समुचित निर्णय लेना होगा।

समलैंगिकता के प्रहार के परिणामों का सही सही आकलन अभी निरीह हिन्दू प्रजा कर भी नहीं पाई थी कि दूसरा आत्मघाती निर्णय सामने आया, जिसके तहत स्वेच्छाचारी विवाहेतर सम्बन्धों को जायज करार दिया गया है। यदि यह खबर सही है तो हिन्दू हितों और व्यवस्था पर यह अकल्पनीय और अप्रत्याशित कुठाराघात ही कहा जायगा क्योंकि मर्यादित जीवन और वैवाहिक मर्यादाओं की रक्षा और परिपालन पर ही हिन्दू धर्म और सामाजिक व्यवस्था आधारित है। श्रीराम को मर्यादापुरुषोत्तम कहा जाता है; जिनके जीवन का प्रमुख आदर्श ही वैवाहिक मर्यादा और शुचिता का पालन करना था; जैसा कि राजा जनक की पुष्पवाटिका में जानकी को देखकर श्रीराम लक्ष्मण से कहते हैं-

मोहिं अतशय प्रतीति मन केरी। जेहि सपनेहुँ परनारि न हेरी।।

जिस देश के सर्वोच्च आदर्शों के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम राम यह घोषणा करते देखे जाते हैं-'एक नारि व्रत रघुवर केरा' उस देश में विवाहेतर सम्बन्धों की मान्यता एक आत्मघाती व्यवस्था नहीं, तो और क्या है? इतना ही नहीं, वैवाहिक सम्बन्धों की पवित्रता का शाश्वत उदाहरण वाल्मीकि रामायण में मिलता है; जहाँ सीता-हरण के पश्चात् श्रीराम अनुज लक्ष्मण से वनमार्ग में मिले हुए आभूषणों को पहचानने के लिए कहते हैं कि कहीं यह आभूषण देवी सीता के तो नहीं हैं? लक्ष्मण श्रीराम को इस संबन्ध में जो जवाब देते हैं, आर्य संस्कृति के उच्चादर्शों का अमर गान है-

केचूरं नैव जानाभि, नैव जानाभि कंकणे,
नूपुरावेव जानाभि नित्यं पादाभिवंदनात्।।

गोस्वामी तुलसीदास इस श्लोक का भावानुवाद करने से अपने आप को नहीं रोक सके-

पगभूषण मैं सकत चिन्हारी। कबहुँ न ऊपर सीय निहारी।।

श्रीराम के बाणों से आहत होकर किष्किन्धापति बालि उन पर प्रश्नों की बौछार कर देता है-

हत्वा बाणेन काकुत्स्थ मभिहानपराधिनम्
किं वक्ष्यसि सतां मध्ये कर्म कृत्वा जुगुप्सितम्। (वा.रा.४/७७)

हे राम! बिना अपराध के ही बाण प्रहार से मुझे मारने जैसे निन्दनीय कर्म को करके तुम सत्पुरुषों के बीच क्या उत्तर दोगे? बाली के प्रश्नों का श्रीराम ने यह उत्तर दिया-

तदेतत् कारणं पश्य यदर्थं त्वं मया हतः।
भ्रातुर्वतसि भार्यायां त्यक्त्वा धर्म सनातनम्।
कामात्स्नुषायां पाप कर्म कृत्।।

महात्मा सुग्रीव की पत्नी को बलपूर्वक अपने अधिकार में करके तू इस प्रकार पाप कर्म कर रहा है, जो अपनी पुत्रवधू के साथ दुराचरण के समान है। गोस्वामी तुलसी दास ने भी इस प्रसंग को निम्नांकित अर्धालियों में बद्ध किया है-

अनुज वधू भगिनी सुत नारी। सुनु मठ ये कन्या सम चारी।।
इन्हइ कुदृष्टि बिलोकत जोई। ताहि वधे कछु पाप न होई।।

भारतवर्ष का इतिहास कदम कदम पर मर्यादा में रहने की शिक्षा देता है। मर्यादा का उल्लंघन करने पर दंड का प्राविधान प्राचीन काल से लागू रहा है। भगवती सीता की खोज में रावण के महलों में गुप्तरूप से पता लगाना श्री हनुमान जी के लिए अत्यावश्यक था। महलों से बाहर निकलने पर हनुमान जी विचार करने लगे कि सोती हुई पर स्त्रियों को मैंने देखा है, यह बात धर्म विरुद्ध है और इस पाप का मुझे प्रायश्चित्त करना चाहिए किन्तु दूसरे ही क्षण विचार करने पर वे इस नतीजे पर पहुँचे-

कामं दृष्टा मया सर्वा विवस्या रावणस्त्रियः।
न तु मे मनसा किंचित वैकल्पमुप पद्यते।

भले ही मैंने रावण के महलों में स्त्रियों को सुप्तावस्था में अस्त व्यस्त वस्त्रों में देखा है किन्तु मेरे मन में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं हुआ- इसलिए प्रायश्चित्त की कोई बात नहीं। कितना ऊँचा चरित्र था हनुमान जी का। इन्द्रियों को संयमित रखना इस देश की परिपाटी है। केशवदास ने रामचन्द्रिका में इसी भावना को लेकर जो चित्र अंकित किया है, वह और भी प्रेरक है। रावण हनुमान जी से पूछता है कि जब तुम राम के दूत हो इतने बलशाली हो तो फिर बंधनों में कैसे आये?

कैसे बँधाया? जु सुंदरि तेरी-
छुई दृग सोवत पातक लेख्यो।।

ऐ रावण! मैं इसलिए बंधनों में पड़ गया कि मैंने तेरे महलों में सीता की खोज करते हुए शयन करती हुई स्त्रियों को देखा है! व्यंजना यह है कि पर स्त्रियों को सुषप्तावस्था में देखने मात्र से मैं बंधनों में पड़ गया हूँ, तू तो भगवती सीता को अपहरण करके ले आया है, तेरा विनाश अति सन्निकट है।

मर्यादाओं की रक्षा तथा उसके प्रति समाज को सचेत करने का दायित्व आर्य समाज का हैं आज आर्य महा सम्मेलन को यह विचार करना है समलैंगिकता और स्वेच्छया विवाहेतर सम्बन्धों को मान्यता के विरुद्ध अगर आर्य समाज आन्दोलन नहीं करेगा- तो कौन करेगा?

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१८८

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

मुक्ति और बंध

(प्रश्न) मुक्ति में जीव का विलय होता है वा विद्यमान रहता है।

(उत्तर) विद्यमान रहता है।

(प्रश्न) कहाँ रहता है?

(उत्तर) ब्रह्म में।

(प्रश्न) ब्रह्म कहाँ है और वह मुक्त जीव एक ठिकाने रहता है वा स्वेच्छाचारी होकर सर्वत्र विचरता है?

(उत्तर) जो ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है उसी में मुक्त जीव अव्याहतगति अर्थात् कहीं रुकावट नहीं; विज्ञान आनन्दपूर्वक स्वतंत्र विचरता है।

(प्रश्न) मुक्त जीव का स्थूल शरीर रहता है वा नहीं?

(उत्तर) नहीं रहता।

(प्रश्न) फिर वह सुख और आनन्द भोग कैसे करता है?

(उत्तर) उसके सत्यासंकल्पादि स्वाभाविक गुण सामर्थ्य सब रहते हैं; भौतिक संग नहीं रहता। जैसे-

शृण्वन् श्रोत्रं भवति, स्पर्शयन् त्वग्भवति पश्चन् चक्षुर्भवति, रसयन् रसना भवति जिघ्रन् घ्राणं भवति, मन्वानो मनो भवति बोधयन् बुद्धिर्भवति, चेतयंश्चित्तम्भवत्य- हङ्कुर्वाणोऽहंकारो भवति।। ।।शतपथ १४।।

मोक्ष में भौतिक शरीर वा इन्द्रियों के गोलक जीवात्मा के साथ नहीं रहते किन्तु अपने स्वाभाविक शुद्ध गुण रहते हैं। जब सुनना चाहता है तब श्रोत्र, स्पर्श करना चाहता है तब त्वचा, देखने के संकल्प से चक्षु, स्वाद के अर्थ रसना, गन्ध के लिए घ्राण, संकल्प विकल्प करते समय मन, निश्चय करने के लिए बुद्धि, स्मरण करने के लिए चित्त और अहंकार के अर्थ अहंकाररूप अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति में हो जाता है और संकल्पमात्र शरीर होता है जैसे

शरीर के आधार रहकर इन्द्रियों के गोलक के द्वारा जीव स्वकार्य करता है वैसे अपनी शक्ति से मुक्ति में सब आनन्द भोग लेता है।

(प्रश्न) उसकी शक्ति कै प्रकार की और कितनी है?

(उत्तर) मुख्य एक प्रकार की शक्ति है परन्तु बल, पराक्रम, आकर्षण, प्रेरणा, गति, भीषण, विवेचन, क्रिया, उत्साह, स्मरण, निश्चय, इच्छा, प्रेम, द्वेष, संयोग, विभाग, संयोजक, विभाजक, श्रवण, स्पर्शन, दर्शन, स्वादन और गन्धग्रहण तथा ज्ञान इन २४ चौबीस प्रकार के सामर्थ्ययुक्त जीव हैं। इससे मुक्ति में भी आनन्द की प्राप्ति भोग करता है।

जो मुक्ति में जीव का लय होता तो मुक्ति का सुख कौन भोगता? और जो जीव के नाश ही को मुक्ति समझते हैं, वे तो महामूढ़ हैं क्योंकि मुक्ति जीव की यह है कि दुखों से छूट कर आनन्द स्वरूप, सर्वव्यापक, अनन्त, परमेश्वर में जीवों का आनन्द में रहना। देखो वेदान्त शारीरिक सूत्रों में-

अभावं वादरिराह ह्येवम्।

जो वादरि व्यास जी का पिता है वह मुक्ति में जीव का और उसके साथ मन का भाव मानता है अर्थात् जीव और मन का लय पराशर जी नहीं मानते। वैसे ही-

भावं जैमिनिर्विकल्पामननात्।

और जैमिनि आचार्य्य मुक्त पुरुष का मन के समान सूक्ष्म शरीर, इन्द्रियां, प्राण आदि को भी विद्यमान मानते हैं। अभाव नहीं।

द्वादशाहवदुभयविधं वादरायणोऽतः।

व्यास मुनि मुक्ति में भाव और अभाव इन दोनों को मानते हैं। अर्थात् शुद्ध सामर्थ्ययुक्त जीव मुक्ति में बना रहता है। अपवित्रता, पापाचरण, दुःख, अज्ञानादि का अभाव मानते हैं।

यदा पंचावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।
बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम्।।

यह उपनिषद् का वचन है-जब शुद्ध मनयुक्त पांच ज्ञानेन्द्रिय जीव के साथ रहती हैं और बुद्धि का निश्चय स्थिर होता है उसको परमगति अर्थात् मोक्ष कहते हैं। *(-क्रमशः)*

वेद प्रवचन

संसार को आर्य कैसे बनाएँ?

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः।। *(ऋ. 9/63/5)*

शब्दार्थ-

हे (**अप्तुरः**) सत्कर्मों में निपुण सज्जनों! (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यशालियों को (**वर्धन्तः**) बढ़ाते हुए (**अराव्णः**) पापियों का (**अपघ्नन्तः**) नाश करते हुए (**विश्वम्**) सम्पूर्ण संसार को (**आर्यम्**) आर्य (**कृण्वन्तः**) बनाओ!

व्याख्या-

आर्यों की उदात्त आदर्शवादिता को ध्यान में रखकर ही वेद ने कहा- **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'**-संसार को आर्य बनाओ! प्रश्न यह है कि आर्य बनाने का उपाय क्या है? तथा, आर्य कौन होते हैं? इन दोनों प्रश्नों के उत्तर मंत्र के पूर्व भाग और उत्तर भाग में दे दिए गए हैं।

मन्त्र में पहली बात कही गई है-**'इन्द्रं वर्धन्तः'**-इन्द्रगुण-विशिष्ट व्यक्तियों का संरक्षण करो, उनको बढ़ाओ और **'अराव्णः अपघ्नन्तः'**- कृपण, अदानी, अनुदार, ईर्ष्यालु और स्वार्थियों को सर्वदा उच्छेद करो। दूसरे शब्दों में जो इन्द्र हैं, वे आर्य हैं और जो अदानी आदि दुर्गुण युक्त हैं, वे दस्यु हैं, अनार्य हैं। संसार में शान्ति के साम्राज्य के लिए आर्यों की वृद्धि होनी चाहिए और दस्युयों का विनाश होना चाहिए।

मन्त्र में 'इन्द्र' शब्द सर्वाधिक विचार योग्य है। वैदिक वाङ्मय में इस शब्द का अर्थ के आधार पर बहुत विस्तृत क्षेत्र है। प्रत्येक प्रकार की विशेष शक्ति रखने वाले जड़ या जंगम पदार्थ को हम इन्द्र शब्द से पुकार सकते हैं। संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'इदि' धातु से, जिसका अर्थ परमैश्वर्य है, यह शब्द बना है, अतः इसका शाब्दिक अर्थ हुआ- परम ऐश्वर्ययुक्त। इन्द्र को बढ़ाने का अर्थ भी यही हुआ कि-परमैश्वर्यशालियों को बढ़ाओ। सांसारिक धन-धान्य को परमैश्वर्य नहीं कह सकते। उसका स्थान तो परमैश्वर्यों में सबसे पीछे है। इस शब्द का मुख्यार्थ यहां 'आत्मज्ञानी' है। **'इन्द्र आत्मा'** यह काशिका में लिखा भी है। कोश में भी इसके अर्थों में **'विद्येश्वर्य युक्तम्'** लिखा हुआ है।

आत्मज्ञान से दूसरे नम्बर पर 'इन्द्र' शब्द शारीरिक बल रखनेवालों के लिए प्रयुक्त होता है। बल भी बहुत बड़ा ऐश्वर्य है। छान्दोग्य (७.८) में लिखा है कि **'बलं वाव विज्ञानाद् भूयः। अपि हि शतं विज्ञानवतामेको बलवानाकम्पयते'** अर्थात् 'सौ कोरे ज्ञानियों से एक बलवान् श्रेष्ठ है, क्योंकि वह अपने बल से उन सैकड़ो को प्रकम्पित कर देता है।' किन्तु वह बल **'आर्त्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि'** -बल दुःखियों की रक्षा के लिए होना चाहिए, निरपराधों को सताने के लिए नहीं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने कहा-**'क्षत्रियैर्धार्यते चापो नार्त्तशब्दो भवेदिति'**-क्षत्रिय लोग इसलिए धनुष धारण करते हैं ताकि किसी दुःखी की करुणा-पुकार उनके कानों में न पड़े। पुराना क्षात्र धर्म था कि बालक, स्त्री, वृद्ध, घायल, निःशस्त्र और दीनता प्रकट करने वालों को (विशेष अवस्था को छोड़ कर) नहीं मारा जाता था, अतः लोक व्यवस्था के लिए ये शारीरिक बलवाले इन्द्र भी अनिवार्य हैं।

तीसरे नम्बर पर यह 'इन्द्र' शब्द सांसारिक धन-वैभव के लिए भी प्रयुक्त होता है। किन्तु उसी धन को इन्द्र कहा जायगा जिसकी दानसरिता का स्रोत दीनों तथा पात्रों के लिए कभी मन्द नहीं होता। जिनकी सम्पत्ति किसी भले कार्य में आती ही नहीं, वे तो 'अनिन्द्र' हैं। भगवान का यह आदेश है कि कमाने के समय से देने के समय दिल और बड़ा रहना चाहिए-**'शतहस्तसमाहर सहस्र हस्तसंकिर'** *(अथर्व.)*

सौ हाथों से कमाते हो तो, हजार हाथों से दो। मनुष्य का इससे बड़ा कोई दुर्भाग्य नहीं हो सकता कि सब-कुछ होते हुए भी हृदय की अनुदारता के कारण सांसारिक व्यवहार में वह दरिद्र ही रहा चला आये। संस्कृत के एक कवि ने बहुत ही काव्यमय ढंग से ऐसे व्यक्तियों का चित्र खींचा है-**विद्ययैव मदो येषां कार्पण्यं विभवे सति। तेषां दैवाभिशप्तानां सलिलादग्नि-रुत्थितः।।**

'विद्या पढ़ने के बाद जिनके मन में नम्रता के स्थान पर दुरभिमान उत्पन्न होता है और वैभव के होने पर उदारता के स्थान पर जिनके मन में कृपणता आती है, उन भाग्यहीनों के लिए तो पानी में से ही आग उत्पन्न हो गई।' तो इन तीसरे प्रकार के धनवाले इन्द्र की भी संसार में बहुत आवश्यकता है। अतः वेद ने आज्ञा दी कि संसार में ज्ञान-विज्ञान के विस्तार के लिए, दीनों के आर्त्तनाद को समाप्त करने के लिए, अपने श्रमार्जित द्रव्य को बांटकर खाने के लिए और भ्रातृ-भाव की स्थापना के लिए संसार को आर्य बनाना चाहिए। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-११२

फिरंगीभिर्ध्वस्तः प्रकृतिविभवो लुष्ठित इव
कलास्ताश्च ध्वस्ताः कृषिरपि विनष्टा बहुविधा।
वयं कृण्वन्तस्त्वार्य स्वयमपि तु दासाहत हृदः
कथं स्यादुद्धारो निजनयनयोरेव पतिताः।।

फिरंगियों ने हमारा प्राकृतिक वैभव
ध्वस्त कर दिया और
लूट लिया है !
हमारी दस्तकारियां नष्ट कर दी हैं और
बहुआयामी खेती भी
चौपट कर दी !!
हम विश्व को आर्य बनाते-बनाते
स्वयं ही आर्य नहीं रहे,
पराधीन, दास हो गये हैं !!!
हम अपनी ही आँखों में
गिर गये हैं तो कैसे
उद्धार होगा हमारा?

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

(पृष्ठ 1 का शेष....)

आर्य सभ्यता-संस्कृति.....

आर्य वीर दल/आर्य वीरांगना दल का गठन सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत किये जाएं यह सार्वदेशिक सभा का मुख्य दायित्व होना चाहिए।

७. युवक/युवतियों को जिम्मेदारी सौंपनी होंगी। उन्हें प्रोत्साहित, सम्मानित करके उनके उत्साह को बढ़ाना होगा।

८. आर्य विद्वान्/विदुषियों को तैयार करने के निमित्त उपदेशक विद्यालय अत्यन्त आवश्यक हैं। भजनोपदेशकों की नितान्त कमी है, भजनोपदेशक तैयार करने के लिए भी हमें योजना बनानी होगी। यह कार्य देश भर की प्रतिनिधि सभाओं को अनिवार्य रूप से अपनाने की आवश्यकता है।

९. आर्यसमाजों को अनुशासित करना आवश्यक है, अनुशासन का अर्थ हे कि समाजें अपनी समाज के सदस्यों में वृद्धि का प्रयत्न करें, सदस्यों, सभासदों, समाज के पदाधिकारियों में सामन्जस्य स्थापित रखें। आर्यसमाज के नियम-उपनियम का पालन करने से स्वतः अनुशासन रहेगा। प्रत्येक आर्यसमाज एक विद्वान्/पुरोहित को आदरपूर्वक स्थायी रूप से रखे और क्षेत्र में प्रचार प्रसार की व्यवस्था को निश्चित करे।

१०. बालक/बालिकाओं को माता-पिता आर्यसमाज अवश्य लायें। उन्हें महर्षि दयानन्द, भगवान राम, भगवान कृष्ण तथा अन्य महापुरुषों के आदर्श जीवन से परिचित करायें। इस कार्य में आधुनिक ढंग कॉमिक्स, आदि माध्यम को ग्रहण करना लाभदायक होगा। आर्य विद्यालयों में नैतिक शिक्षा की उचित व्यवस्था तथा पारितोषिक आदि आकर्षक योजना बनायें, इसके अच्छे परिणाम निकलेंगे। इससे बच्चों की रुचि के अनुसार उनके ज्ञान में वृद्धि होगी और उससे उनमें धार्मिक प्रवृत्ति बलवती होगी।

११. भारतीय संस्कृति का दुष्प्रचार करने वाली मीडिया के खिलाफ आर्य समाज की पत्र-पत्रिकाओं में सही ढंग से विरोध किया जाए। वर्तमान में वेबसाइट, इण्टरनेट जैसे साधनों को प्राथमिकता देनी होगी। हम जो बोलें उसके प्रति वचनबद्ध होकर उसे क्रियान्वित करें। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग को आकर्षक बनाने की आवश्यकता है, इस निमित्त सम्पर्क-सूत्र को विशेष प्रयोग में लाया जाये। सत्संग में रुचि उत्पन्न होने से लोग स्वाध्याय भी करेंगे जिससे उनमें निष्ठा, श्रद्धा का उदय होगा। आर्यसमाज का अपना चैनल हो, इस तरफ सही आर्यों को सहयोग में आना चाहिए।

१२. विदेशों में आर्यसमाज अच्छा काम कर रहा है, कर्मठ आर्यों को प्रोत्साहित करना सभा का दायित्व है विदेशों के लिए भिन्न-भिन्न भाषाओं में उपदेशक तथा साहित्य तैयार करने की बृहद्योजना सभा को बनानी चाहिए।

उपर्युक्त वर्णित कुछ मुख्य बिन्दु हैं जिनको मनसा, वाचा और कर्मणा अपनाया जाये।

मैं उत्तर प्रदेश में अयोध्यानगरी के समीप टाण्डा में एक आर्य परिवार में जन्मा भाग्यशाली आर्यसेवक हूँ। मेरे पिता श्री बाबू मिश्रीलाल आर्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, वैदिक सिद्धान्तों के कट्टर पोषक, आर्यसमाज के इतिहास में अग्रणी नेता थे , उनकी सन्तान होने का मुझे गर्व है। मैं अपना कर्तव्य अपनी योग्यता व सामर्थ्य के अनुसार निभा रहा हूँ। मेरा शेष जीवन महर्षि दयानन्द के लिए समर्पित है।

पूर्वजन्म से अर्जित संस्कारों से आर्यसमाज संगठन को सुदृढ़ से सुदृढ़ बनाने में मेरी विशेष रुचि थी और उसके अनुरूप मैंने उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार, झारखण्ड को संगठित करने के लिए कार्य किया, सफल भी रहा। स्वामी आनन्दबोध जी एवं पं.वंदेमातरम जी का मुझ पर वरद हस्त था, उनसे मुझे निर्भीकता, दृढ़ता और कर्मठता का पाठ मिला और उन्होंने सार्वदेशिक स्तर पर आर्यसमाज की सेवा करने का अवसर प्रदान किया, विपरीत परिस्थितियों में कार्य करने का आनन्द और ही है- मैं कार्य करता हूँ किन्तु घुटन सी बनी रहती है। सिद्धांतों के साथ खिलवाड़ व समझौता स्वभाव में नहीं, फिर भी कभी निराश नहीं हुआ, आशा ही जीवन है- इस दृढ़ निश्चय के साथ बढ़ता ही रहा।

महर्षि ने अपने जीवनकाल में श्रीमती परोपकारिणी सभा नामक एक उत्तराधिकारिणी सभा का निर्माण किया, उसके उद्देश्य निर्धारित किये और समिति के सदस्य निश्चित करके तत्कालीन राजे महराजे व वैदिक विद्वानों को मनोनीत किया जिससे स्वामी जी का मन्तव्य स्पष्ट है कि वह सम्पन्न, समर्थ लोगों के हाथों में सभा को सुरक्षित देखना चाहते थे। आज वर्तमान परोपकारिणी सभा का क्या रूप बन गया है? चाटुकारिता को प्रश्रव देखकर वंश वाद तक को महत्व दिया जा रहा है। सभा के ऐसे आचरण को मूक दर्शक बन कर देखते रहना, महर्षि की हत्या करना है।

प्रसन्नता है कि परोपकारिणी सभा एवं सत्यार्थप्रकाश प्रकरण पर सार्वदेशिक सभा के दोनो गुट एक विचार रखते हैं और उसकी रक्षा निमित्त सजग हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महती आवश्यकता है सार्वदेशिक सभा को सशक्त होने का, संगठन में ही शक्ति है, शक्ति के अभाव में आप शून्य की श्रेणी में हैं। आर्यसमाज का अतीत अति उज्जवल था, बड़े बड़े ऐतिहासिक आंदोलन सफल रहे, आर्यों की दुंदुभी बजती थी, आज आपका क्या मूल्यांकन है? प्रत्येक आर्यसमाजी जानता है, सत्य से आप विमुख नहीं हो सकते। आर्य समाज के नियम 'सत्य को ग्रहण करने, असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्दत रहना चाहिये' की आप जान बूझ कर अवहेलना कर रहे हैं। आर्य समाज कोई पार्टी नहीं है। आर्य समाज की नींव, त्याग, बलिदान पर है। आगे जरा विचार करें हम क्या थे, और आज हम क्या हो गये, आर्य समाज जैसी बुद्धिजीवी संस्था अपने अतीत से सबक लें और एकजुट होकर संगठन को शक्तिशाली बनायें।

आर्य समाज के उद्देश्य अकाट्य हैं जिसके आधार पर हम सारी दुनियां के मत मतान्तरों को झुका सकतें हैं, मात्र आवश्कयता है छोटें मोटे अहम को तिलांजलि देने की। मैं संगठन का व्यक्ति रहा हूँ, वर्षों से वैदिक मान्यता पर आधारित आर्यसमाज का रक्त प्रवाहित हो रहा है उसी पीड़ा को लेकर आज आर्यों से निवेदन करने को विवश हो रहा हूँ। आज सारा देश आर्य समाज की तरफ देख रहा है, हम अपने जमीर को जागृत करें और आर्य होने का गौरव पुनः प्राप्त करें। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन एक ऐसा अवसर है जब हम अपनी पुरानी शक्ति को प्रदर्शित करते हुये, हम एक थे, हम एक हैं, और एक रहेंगे को प्रत्यक्ष रूप में सिद्ध कर देवें तभी ''कृण्वन्तों, विश्वमार्यम्'' का नारा लगाना सार्थक होगा।

-पूर्व कार्यकारी प्रधान,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
प्रधान, आर्य समाज टाण्डा, (उ.प्र.)

वाचनालय से

विघटन की राजनीति का षडयंत्र क्यों? : डॉ.दिनेश शर्मा

सत्ता के लिए राजनीतिक लाभ को दृष्टिगोचर रखते हुए, स्वतंत्रता के बाद जिस प्रकार की विघटनकारी शक्तियों को पाला-पोसा गया और शुद्ध राजनीतिक स्वार्थों की सिद्धि की गयी, आज उनके कारण देश और समाज की दशा और भी भयावह हो गयी है। सरकारें आती हैं, सरकारें जाती हैं, लेकिन संवैधानिक व्यवस्था के कारण राष्ट्र वहीं विद्यमान रहता हैं मातृभूमि और समाज का विघटन किसी भी राष्ट्रवादी को स्वीकार नहीं होना चाहिए। वर्तमान में राजनीतिक विद्वेष के वशीभूत होकर सामाजिक समरसता को नष्ट करने की दुर्नीति के लिए विभिन्न विघटनकारी मुद्दों को उछालकर समाज में आक्रोश की अग्नि को छलपूर्वक प्रदीप्त किया गया, यह किसी भी प्रकार स्वीकार्य नहीं हो सकती।

पिछले दिनों जिस प्रकार रोहिंग्या घुसपैठिए मुसलमानों का मुद्दा उठाया गया, उनके लिए दया और भावना का सहारा लेकर राजनीतिक पार्टियों ने निर्भीकता से और बेशर्म होकर उनके संरक्षण की बात की, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा को पूर्ण रूप से तिलांजलि दे दी गयी। जिस प्रकार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का ढोंग फैलाकर इस्तीफा देने और पुरस्कार लौटाने की कुत्सित राजनीतिक घटनाएं देखने को मिलीं, जिस प्रकार गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बिहार में अनुसूचित जाति-जनजाति के वर्गों को आरक्षण रद्द करने की अफवाह फैलाकर वोट बैंक के रूप में उनके विद्रोह को हिंसात्मक दिशा देने का प्रयास किया गया, हिन्दू आतंकवाद का नारा जिस मनमोहन सरकार के समय उभारकर तुष्टीकरण की राजनीति को पोषित कर वोट बैंक को सुरक्षित रखने का षडयंत्र किया गया और इसी प्रकार बलात्कार की घटनाओं ने मानवता को शर्मसार किया है। उस पर भी विभिन्न पार्टियां राजनीतिक रोटियां सेंकने से बाज नहीं आतीं। ये घटनाएं राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक समरसता को विध्वंस करने की सोची-समझी चाल के ही उदाहरण हैं। हम समझते हैं कि सत्ता का मोह प्रबल होता चला जा रहा है, जिसके कारण राजनतिक दल लोकतांत्रिक पद्धति को भी प्रदूषित करते जा रहे हैं।

(पाक्षिक **'परोपकारी'**, अजमेर)

वेदाध्ययन क्यों करें?

वेदों की गणना उच्चकोटि के साहित्य में की जाती है। वेद एक ऐसा काव्य हे, जो न कभी मरता है, न कभी पुराना होता है। जो काव्य में उत्कर्षाधायक तत्व अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, शब्दालंकार, अर्थालंकार आदि माने जाते हैं, वे सब वेद काव्य में उत्कृष्ट रूप में विद्यमान हैं। वेद के शब्दों में विविध अर्थों को देने की अतुलनीय शक्ति उपस्थित है। साहित्य का अध्ययन स्वान्तःसुखाय होता है, यह स्वान्तःसुख वैदिक साहित्य के मर्म में प्रवेश करने वाले साहित्याराधक को कहीं अधिक प्राप्त हो सकता है।

वैदिक संस्कृति संसार भर की संस्कृतियों में [illegible] विशिष्ट संस्कृति है। वर्णाश्रम-व्यवस्था, यज्ञ, दान, अतिथि-सत्कार, तपस्या, ब्रह्मचर्य, अनिवार्य शिक्षा, आगतों की सेवा, ईश्वर पूजा, सौहार्दभावना, स्वराज्य, समृद्धि, अग्रगायिता, पाशविक शक्तियों पर विजय आदि इस संस्कृति के प्रमुख अंग हैं। इस संस्कृति पर हम ही नहीं, सारा विश्व मुग्ध है।...जो संस्कृति इतनी महत्वपूर्ण है, उसका प्रामाणिक ज्ञान हम वेदों को पढ़कर ही कर सकते हैं।

भाषाविज्ञान के विकास में वैदिक भाषा के अध्ययन ने विशेष योगदान दिया है। भारोपीय भाषा परिवार सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण परिवार माना जाता है, जिसका उद्गम किन्हीं अंशों में वैदिक भाषा ही मानी जा सकती है।

भारतीय धर्मशास्त्र में वेदो का सबसे अधिक महत्व माना गया है। यदि कहीं परस्पर विरोध हो, तो उस दशा में वेद की बात ही प्रामाणिक मानी जायेगी, यह सर्वमान्य सिद्धान्त रहा है।

(पाक्षिक **'आर्य जीवन'**, हैदराबाद)

मैं ईश्वर को जानता हूँ : मनमोहन कुमार आर्य

हाँ, मैं ईश्वर को जानता हूँ।

ईश्वर संसार में सबसे महान है। वह अन्धकार से पूरी तरह मुक्त है। वह आदित्यवर्ण अर्थात् सूर्य के समान प्रकाशमान, ज्योति स्वरूप, ज्ञान स्वरूप व आनन्द स्वरूप आदि असंख्य गुणों वाला है। मनुष्य तब तक मृत्यु के पार नहीं जा सकता, जब तक वह ईश्वर को न जान ले और प्राप्त न कर ले। मृत्यु से पार जाने का अर्थ है, मृत्यु पर विजय प्राप्त करना। ऐसा तब होता है जब कि मनुष्य ईश्वर आत्मा और जन्म व मृत्यु के चक्र के यथार्थ रहस्य को जान लेता है।...मृत्यु के पार मोक्ष है। मोक्ष में दुःख का लेशमात्र भी नहीं है। मोक्ष में आत्मा ईश्वर के सानिध्य में रहकर आनन्द का भोग करता है। वह जन्म व मरण के दुःखरूपी चक्र से मुक्त हो जाता है।

मोक्ष की अवधि ३१ नील १० खरब ४० वर्ष होती है।

मोक्ष के बाद मनुष्य पुनः मनुष्य योनि में जन्म लेता है। वह वेदाध्ययन सहित श्रेष्ठ कर्मों को करके पुनः जीवनोन्नति कर मोक्ष को प्राप्त कर सकता हैं करता भी है।

हमने जो उपर्युक्त विचार लिखे हैं, वह हमारे नहीं हैं, अपितु ईश्वर द्वारा यजुर्वेद के ३१वें अध्याय के मंत्र संख्या १८ में मनुष्यों को उपदेश करते हुए बताये गये हैं। वे स्वतः प्रमाण होने से यह वेद वचन भी पूर्ण प्रमाणिक एवं मान्य है।

(मासिक **'टंकारा समाचार'**, नई दिल्ली)

शुभाकांक्षा

जुलाई २०१८ का अंक समय से मिल गया। एक बैठक में ही समस्त सामग्री को पढ़ गया। स्व. नीरज जीएक महान् गीतकार थे किन्तु सत्ताईस वर्ष की उम्र में लिखी गई 'प्राणगीत' की भूमिका को पढ़कर पता चला कि वे गद्य में भी गम्भीर विषय का चिन्तन करने की सामर्थ्य रखते थे। नीरज जी से मेरा सम्पर्क दो बार हुआ। मैंने अपने नगर में सन् १९७३ में नीरज-नाइट का आयोजन किया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता मैंने की थी। कवि के रूप में स्थापित होने के बाद मेरे छोटे पुत्र डा.कुमार विश्वास ने नगर में नीरज जी का नागरिक अभिनन्दन कराया था। उस समय नीरज जी का जलपान मेरी कुटिया पर हुआ था। नीरज जी के अभिनन्दन के बाद भयंकर आंधी-तूफान के कारण पंडाल अस्त-व्यस्त होने से कवि सम्मेलन नहीं हो पाया था। तब नीरज जी ने घोषणा की थी- कल कवि सम्मेलन होगा जिसमें सभी को आना है। सभी कविगण कुमर के आवास पर ठहरे थे और अगले दिन बाँके बिहारी मण्डप के हाल में कवि सम्मेलन हुआ था। शायद यह अनूठा अवसर था, जब एक दिन के पारिश्रमिक के बदले में कवियों ने दो दिन दिये थे।

सम्पादकीय में सम्पादक महोदय ने गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस का संदर्भ देकर यह सिद्ध किया है कि उत्तम विचार कहीं से भी ले सकते हैं। शास्त्रार्थ महारथी स्व.अमर स्वामी नैतिक मूल्यों पर प्रवचन करते समय इसी ग्रन्थ की सूक्तियां सुनाया करते थे। यह सत्य है कि वेद ज्ञान के आदिस्रोत हैं किन्तु यह भी कटु सत्य है कि वेदों तक पहुँच बहुत कम लोगों की रहती है तभी तो उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक, स्मृतियाँ, भाष्यादि की आवश्यकता हुई। अयोध्या में धर्मप्राण जन इसी कारण 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के स्मारक की योजना लेकर आये हैं। यह भी सत्य है कि गोस्वामी तुलसीदास ने 'नानापुराण निगमानमसम्मतं' लिखकर समस्त भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान को एक ग्रन्थ में सरल भाषा में प्रस्तुत कर दिया है जिससे हिन्दुओं का बहुत बड़ा उपकार किया है। शास्त्रार्थ महारथी पं.रामचन्द्र देहलवी के तर्कों को पढ़कर दांतों तले अँगुली दबानी पड़ती है। 'काव्यायन' में सभी कवि अच्छा लिख रहे हैं। मेरा सुझाव है कि कुछ नये कवियों को भी अवसर दिया जाना चाहिए।

-डॉ.चन्द्रपाल शर्मा
सहयोग, सर्वोदय नगर, पिलखुआ-२४५३०४

***

राष्ट्र गौरव को उद्वेलित करने वाली डॉ.वेद प्रकाश आर्य की लोक प्रशंसित कविताएं 'धधकते पृष्ठ' काव्यकृति में संकलित हैं। इस प्रेरक प्रभावी कविता संग्रह को पढ़ने का सुअवसर मिला तो पढ़ता ही चला गया। एक बैठक में समाप्त हो गया। रग-रग में राष्ट्र और राष्ट्रीयता-बोध का रक्त संचार और गतिवान हो गया। हल्दीघाटी के श्याम नारायण पाण्डेय, रानी लक्ष्मीबाई (झांसी की रानी) के डॉ.आनन्द, डॉ.बृजेन्द्र अवस्थी, छैल बिहारी वाजपेयी जैसे वीर रस के कवियों की स्मृति ताजा हो गयी। 'धधकते पृष्ठ' मे कवि ने देश-प्रेम-रस का संचार किया है जो समय की पुकार

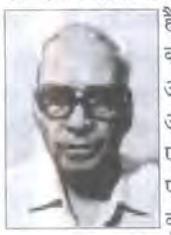

है। यद्यपि ये रचनाएं कई दशक पूर्व अवतरित हुई हैं, पर आज भी प्रासंगिक एवं हृदयग्राह्य प्रेरक पठनीय हैं। संग्रह की कुल बारह कविताएं जन-मन में भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के प्रति निष्ठा-भाव जगाने में सक्षम प्रतीति की अधिकारिणी हैं। राष्ट्रीय कवि डॉ.वेद प्रकाश आर्य का प्रथम पृष्ठ पर ही उद्घोष है-

'दे यही आदेश, मेरे देश, ओ शाश्वत चितेरे।
राष्ट्र का सन्बद्ध कर दें, ये धधकते पृष्ठ मेरे।'

कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य को समर्पित यह कृति पठनीय, मननीय, चिन्तनीय और आचरणीय भाव संचारी प्रेय निधि बन गयी है। डॉ.कन्हैया सिंह, अमृत खरे और स्वयं कवि ने इन कविताओं के मर्म को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है। कवि की मनोयज्ञ भावना प्रत्येक कविता में जिज्ञासा के साथ कर्तव्य परायणता का संकल्प करने का मंगलमय सन्देश देती है। डॉ.आर्य की ही रचना-पंक्तियां द्रष्टव्य हैं-

यह पुण्य भूमि जिस दिन अरि से खाली होगी,
पुष्पित सुरभित जब एक-एक डाली होगी।
हर कर में मातृ वंदना की थाली होगी।
विजय-पर्व उस दिन होगा, दीवाली होगी।।

डॉ.वेद प्रकाश आर्य के इस कविता संग्रह का सर्वत्र स्वागत होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। हार्दिक शुभकामनाएँ। जय हिन्दी जय देवनागरी।

-डॉ. महेश चन्द्र 'विधु'
२०१, कल्याणी देवी, उन्नाव-२०९८०१

***

आर्य लोक वार्ता का जुलाई अंक

गीतकार नीरज के महाप्रयाण पर विशेष प्राप्त हुआ। नीरज जी ने अपनी युवावस्था मे ही समझ लिया था कि सौन्दर्य, प्रेम और मृत्यु का अन्तःसम्बन्ध है। अपनी इसी मनोभावना का नीरज जी ने अपने लेखन में हृदयग्राही चित्रण किया जो सर्व साधारण को आसानी से समझ में आ सके। सम्पादकीय में वर्णित है कि अयोध्या में वेद भाष्य स्मारक बनेगा जिससे आर्य गौरव की पुर्नप्रतिष्ठा होगी। वेदांजलि में आजीवन आचरणीय चार उत्तम कर्म बताये गये हैं जो मनुष्य को अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए जन्म से मृत्यु पर्यन्त क्रमानुसार आचरण में लाने चाहिए। पहला परिश्रम के पश्चात जो वस्तु अपने हित में आती है उसे अपना समझो और उसी को ग्रहण करो। दूसरे की वस्तु लेने की कोशिश मत करो। संसार में जितने युद्ध हुए हैं वे सब सदुपदेश की अवहेलना के कारण ही हुए थे। 'मनुष्य का विराट रूप' सर्व साधारण के लिए एक अच्छा मार्गदर्शन दर्शाता है जो सभी के जीवनों में अवश्य उपयोगी सिद्ध होने वाला है। प्रायः लोग समझते हैं कि सभा या जन समूह में उच्च आसन पर बैठने से ही प्रतिष्ठितों में गणना होगी जो एक भ्रामक विचार है। प्रतिष्ठा तो मानव के आचरण अच्छे हों सहयोगी भावना व उच्च विचार हों, सबका भला करने वाला हो, सबका शुभ चिन्तक हो, तो मिलेगी ही।

-प्रमोद कुमारी
सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता अगस्त-सितम्बर

संयुक्तांक के अग्रलेख में कालजयी आग्नेय कवि श्रीश्यामनारायण पाण्डेय की जन्म जयंती पर भावपूर्ण सुस्मरण नमनीय है। 'हल्दीघाटी' और 'जौहर' जैसी देशभक्तिपूर्ण कृतियों के प्रणेता के रूप में वे राष्ट्रपुत्रों के प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। 'कालजयी काव्य' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रदत्त 'घासों की रोटी' कविता अंश में कन्या के तुतली भाषा में क्रन्दन चित्रण अत्यंत दारुण तो हैं ही, साथ ही कविता यथार्थपूर्ण 'बाल काव्य' के दर्शन कराती है। कवि का यह प्रयास अनूठा और अनुकरणीय है। भारतोदय की पूर्व पीठिका के रूप में 'सरयूबाग अयोध्या' का जो कथ्य-तथ्य सम्पादकीय में प्रस्तुत किया गया है, वह भी असाधारण है। भव्य स्मारक योजना हेतु आर्यव्रती राष्ट्रवती अभिनन्दनीय है। आपके गुरुभाई डॉ.पाण्डेय रमेन्द्र का परिचय बड़े कुतुहल पूर्ण ढंग से दिया है। 'मानस चन्दन' पत्रिका के मूल उद्भावक डॉ.रमेन्द्र जी हैं, यह जानकारी मुझे प्रथम बार इसी परिचय से मिल रही है तथापि डॉ.सुनील कुमार सारस्वत इसका सम्यक प्रकाशन करते हुए बधाई के पात्र हैं। 'विनय पीयूष' में इस बार का काव्यानुवाद प्रभावी एवं आह्लादकारी है, एतदर्थ भाई अमृत खरे को साधुवाद। शुभाकांक्षा में अनेक विद्वानों के सहृदय विचार तथा काव्यायन में ललित काव्य अभ्यांतर को रसाप्लावित करता है। समलैंगिकता पर कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य के विचार सर्वथा तर्कसम्मत हैं, भारतीय संस्कृति पर यह सीधे कुठाराघात है सत्तालोभी शासन कब जागेंगे उत्तर अलक्ष्य और अलभ्य है। जिस भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर हम गर्व करते आए हैं, यदि उसे ही त्याग देंगे तो विदेशियों के दास बनने में विलम्ब नहीं।

आर्य संस्कृति के प्रतिगामी, देश कहाँ ले जायेंगे।
खोकर निज अस्तित्व-अस्मिता, दीन-हीन हो जाएंगे।
वैदिक ग्रन्थों से निसृत है, ज्ञान-धन्न विज्ञान प्रखर,
पाश्चात्य संस्कृति के पोषक, दास मात्र रह जाएंगे।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
११७, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता का प्रत्येक अंक विशिष्ट ज्ञान से परिपूर्ण होता है। इसमें विज्ञापन का पाखण्ड नहीं होता जिससे यह लघु आकार में होते हुए भी स्तरीय पत्रिका का आनन्द देता है। आपका उत्कृष्ट विषय-सामग्री चयन प्रशंसनीय है। प्रस्तुत अंक में श्रीश्यामनारायण पाण्डेय की जयन्ती पर विशेष आलेख डॉ.शिवप्रसाद सिंह ने अत्यंत सटीक और सशक्त विचार प्रस्तुत किये हैं जो सच्चे भारतीय के लिए प्रेरक हैं। सम्पादकीय में नारी के मन्दिर प्रवेश के पक्ष में वेद सम्मत प्रमाण दिए गए हैं जो धार्मान्धों की आँखे खोलने वाले हैं। आजकल केरल के सबरीमाला मन्दिर में नारी के प्रवेश पर विवाद जारी है जबकि न्यायालय ने प्रवेश की अनुमति दे रखी है। ऐसे में अन्धविश्वासी पाखण्डी और आदिकालीन कुत्सित मानसिकता से ग्रस्त भारत का उत्थान क्या होगा, पतन ही होगा। ईश्वर ऐसे शर्म विरोधियों को सद्बुद्धि दे। वेदांजलि में सेनापति के गुणों की व्याख्या, पाण्डेय रमेन्द्र का जीवन परिचय, जिज्ञासा और समाधान, ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप आदि विचारवीथी में दिया गया ज्ञान जीवन के लिए बहुत उपयोगी है। शुभाकांक्षा और काव्यायन पत्रिका के शरीर और आत्मा हैं। आपका विषय चयन प्रशंसनीय है। आर्य लोक वार्ता की अनुदिन प्रगति हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। कहना न होगा, इसका प्रत्येक अंक सुव्यवस्थित रख रही हूँ और मन की वास्तविक शांति के लिए अंकों को बराबर पढ़ती हूँ। आपके दीर्घ जीवन की विमन कामना है।

-नमिता वैश्य
अध्यापिका,
प्रा.पा.खालेगाँव, मसकनवा, गोण्डा (उ.प्र.)

***

अक्षर लोक

अंक चक्र : डॉ. चन्द्रपाल शर्मा
पेपरबैक / पृष्ठ संख्या २६१
मूल्य : दो सौ पचास रुपये
प्रकाशक : डायमण्ड पाकेट बुक्स (प्रा.)लि.
X-३०, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया,
फेज-II नई दिल्ली-११००२०

प्रत्येक समाज या संस्कृति में कुछ शब्द या अंक ऐसे होते हैं, जिनके उच्चारण मात्र से ही उस शब्द या अंक से जुड़ी हुई अनेक घटनाओं, व्यक्तियों, पद्धतियों या सिद्धान्तों का स्मरण हो आता है। ऐसी संख्याएं या शब्द किसी जाति या राष्ट्र के धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक जीवन का विस्तृत इतिहास संजोए रहती हैं। एक से दस तक के अंक मूल अंक हैं। इन मूल अंकों का उच्चारण करते समय भारतीय जनमानस का ध्यान कहाँ-कहाँ जाता है, यह बताना ही इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य है। ये अंक भारत के विविध क्षेत्रीय ज्ञान से अवगत कराने का अद्भुत सामर्थ्य रखते हैं। ('अंक चक्र' पृ.२६)

पर्यावरणीय बाल कविताएँ
—गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
पेपरबैक / पृष्ठ संख्या ५०
मूल्य : एक सौ रुपये
प्रकाशक : अभिरुचि प्रकाशन,
६४५ए/५७७, जानकी विहार कालोनी,
जानकीपुरम्, लखनऊ-२२६०२१

शीर्षक के अनुरूप पुस्तक में पर्यावरण से सम्बन्धित 'विनम्र' की बाल कविताएं संग्रहीत हैं। पर्यावरण से परिचय, पर्यावरण से लगाव और उसकी शुचिता की बातें बच्चों को घुट्टी में पिला देने के उद्देश्य से यह कविताएं रची गयी हैं। 'विनम्र' अपने उद्देश्य में सफल भी हुए हैं।

दयानन्द चरितामृतम्
—डॉ.गणेश दत्त शर्मा
हार्ड बाउण्ड / पृष्ठ संख्या १४२
मूल्य : चार सौ रुपये
प्रकाशक : उर्मिला प्रकाशन,
एफ/ए-२३७, लाजपत नगर,
साहिबाबाद, गा।जयाबाद-२०१००५

'विवेकानन्द चरितामृतम्' तथा 'दर्शनानन्द चरितामृतम्' से चर्चा में आये डॉ.गणेश दत्त शर्मा का यह संस्कृत खण्डकाव्य हैं यह लघु काव्य सरल संस्कृत छंदों में है, साथ ही उनके हिन्दी अनुवाद भी दिये गये हैं। खण्डकाव्य चार सर्गों में विभक्त है, जिनमें क्रमशः ४०, ५६, ५६ और ५६ छन्द हैं। संस्कृत काव्य और महर्षि दयानन्द में अनुराग रखने वाले पाठकों को पुस्तक पसंद आयेगी।

बदल गये परिवेश (गीत संग्रह)
—डॉ. अशोक कुमार गुप्त 'अशोक'
पेपरबैक / पृष्ठ संख्या ७२
मूल्य : सत्तर रुपये
प्रकाशक:निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,
३७, 'शिवराम कृपा' विष्णु कालोनी,
शाहगंज, आगरा

'बदल गये परिवेश' कवि-गीतकार डॉ.अशोक कुमार गुप्त 'अशोक' के बावन गीतों का संग्रह है। इनमें अपनी मिट्टी की महक है और अपनी परम्पराओं का भावुक सम्मान भी। इनमें निश्छल मन का सात्विक प्रेम बार-बार उमड़ता है और पाठक को आकर्षित करता है।

धारावाहिक-(86)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

९-स्वावलम्बन

एक बार एक डायोजिनीज का गुलाम चुपचाप कहीं भाग गया। डायोजिनीज उसकी परवाह न करके सब काम स्वयं अपने हाथ से करने लगा। उसके एक मित्र ने कहा- आप क्यों इतना कष्ट सहते हैं, उस गुलाम को ढूंढकर पकड़ लाइये और उससे काम लीजिये।

डायोजिनीज ने कहा- क्या यह मेरे लिये लज्जा और अपमान की बात न होगी कि मेरा सेवक तो मेरे बिना रह सकता है और मैं उसके बिना अपना काम नहीं चला सकता? मैं दासानुदास नहीं बनूँगा!

सत्पुरुष कष्ट सहकर भी आत्मसम्मान की रक्षा यत्नपूर्वक करता है। महामुनि व्यास के मत से- क्षुद्र मनुष्यों को जीविका नहीं होने का बड़ा भय रहता है और मध्यम श्रेणी के व्यक्तियों को मृत्यु का भय। उत्तम जनों को अपमान से बड़ा ही भय लगा रहता है।-

अवृत्तिर्भयं मर्त्यानां मध्यानां मरणाद् भयम्।
उत्तमानां तु मर्त्यानामवमानात्परं भयम्।।

-महाभारत

१०-विकारों के लिए भी स्थान चाहिये

प्राचीन यूनान के एक रईस ने वहाँ के एक नामी विद्वान् को अपना नवनिर्मित भव्य भवन देखने के लिए बुलाया। उसे साथ लेकर वह बड़ी देर तक एक-एक कमरे की शोभा और स्वच्छता दिखाता रहा। इसी बीच में उस विद्वान् को थूकने की इच्छा हुई, परन्तु वहाँ कहीं इसके लिए उपयुक्त स्थान नहीं मिला। सभी दीवालों पर लिखा हुआ था कि यहाँ थूकना मना है। सम्मान्य अतिथि से रहा नहीं गया। उसने सोच-विचार कर ऐसी बात कही, जिससे रईस को हँसी आ गई। ज्योंही उसने हँसने के लिये मुँह खोला, विलायती पण्डित ने उसके मुँह में थूक दिया। रईस ने बिगड़कर उससे इस अशिष्टता का कारण पूछा। विद्वान् ने कहा-मुझे यही एक स्थान दिखाई पड़ा, जहाँ यह नहीं लिखा है कि थूकना मना है।

प्रायः लोग इस बात को भूल जाते हैं कि संसार विकारमय है। स्वयं अग्नि भी, जो सब विकारों को जला देती है, निर्धूम नहीं होती। मानव-जीवन में भी विकार होते हैं। धुँआ निकालने के लिए जिस प्रकार छिद्र चाहिये, उसी प्रकार मनुष्य के स्वाभाविक-शारीरिक एवं मानसिक विकारों को मर्यादित करने के लिये उपयुक्त स्थान या मार्ग चाहिये। घर में यदि छोटी-छोटी नालियाँ न हों तो सारा घर गन्दगी से भर जायगा।

११-बातें बनाना व्यर्थ है

एक रोमन दार्शनिक के सामने एक वाचाल डींग हाँकता था कि मैंने भी बड़े बड़े विद्वानों को देखा है और उनके साथ वार्तालाप किया है।

दार्शनिक ने कहा-मैंने भी अनेक धनिकों को देखा, उनसे बातचीत की, परन्तु मैं इससे धनी नहीं हुआ।

व्यास ने सत्य ही कहा है कि केवल आत्मप्रशंसा से कोई मूर्ख प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त कर सकता-'न लोके राजते मूर्खः केवलात्मप्रशंसया।'-महाभारत।

१२-गुणग्राहकता

सत्पुरुष अपने विरोधी की भी योग्यता का सत्कार करता है और व्यक्तिगत राग-द्वेष या मतभेद के कारण किसी के साथ अन्याय नहीं करता। महावीर नेपोलियन ने एक बार अपने एक प्रतिकूल आलोचक को राज्ये के उच्च पद पर नियुक्त किया। लोगों ने उसे सुझाया कि वह तो आपके विषय में अच्छे विचार नहीं रखता। इस पर नेपोलियन ने कहा- यदि वह अपना काम योग्यतापूर्वक कर सकता है तो मुझे इसकी चिन्ता नहीं है कि मेरे विषय में उसकी व्यक्तिगत धारणा क्या है; मुझे तो उसके काम से मतलब है।

इसी प्रकार अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने युद्ध-सचिव के पद पर एक ऐसा व्यक्ति को नियुक्त किया जो उसका बहुत पुराना और प्रधान प्रतिद्वन्द्वी था। लोगों ने उसे याद दिलाया कि अनेक अवसरों पर उसने भाँड़, गोरल्ला आदि कहकर आपकी खिल्ली उड़ाई है। लिंकन ने कहा यदि वह राष्ट्र के लिए उपयोगी है तो मुझे इन व्यक्तिगत आक्षेपों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिये; वह लिंकन की बुराई कर सकता है, राष्ट्रपति का तो सम्मान ही करेगा।

बड़े लोग एक तो छोटी बातों को महत्व नहीं देते, दूसरे वे इस नीति के अनुसार कार्य करते हैं कि थोड़े-से दोष के कारण बहुत गुण वाले पुरुष को छोड़ देना चाहिये- 'नाल्पदोषाद् बहुगुणा- स्त्यज्यन्ते'-कौटिल्य। वे शत्रु के भी गुणों को ग्रहण कर लेते हैं- 'शत्रोरपि सुगुणो ग्राह्यः'-कौटिल्य। इंग्लैण्ड के इतिहास प्रसिद्ध प्रधानमंत्री डिजरायली ने भी अपने एक तीस वर्ष के विरोधी की मृत्यु के बाद उसके बाल-बच्चों के पालन-पोषण के लिए राज्य की ओर से पेंशन दिलाकर अपनी बौद्धिक उदारता का परिचय दिया था। सन् १८७४ में उसने अंग्रेजी के धुरन्धर लेख कार्लाइल को सर्वोच्च राज सम्मान प्रदान किया, यद्यपि व्यक्तिगत रूप से कार्लाइल उसका घोर विरोधी था।

इस प्रसंग में ब्रह्मपुराण [illegible]ह प्राचीन उक्ति उल्लेखनीय है-

एतदेव सुजातानां लक्षणं भुवि देहिनाम्।
कृपार्द्र यन्मनो नित्यं तेशामप्युहितेषु हि।।

अर्थात्, संसार के सत्पुरुषों का यही लक्षण है कि अहित करने वालों के प्रति भी उनके मन में सदा करुणा ही भरी रहती है।

१३-यत्सारभूतं तदुपासनीयम्

अब्राहम लिंकन के शासन-काल में अमेरिका में एक नये ढंग की बन्दूक का आविष्कार हुआ। राष्ट्रपति की आज्ञा से इस बात की जाँच के लिये विशेषज्ञों की एक समिति बैठी कि नई बन्दूक युद्ध के लिए उपयोगी हो सकती है अथवा नहीं। कमेटी ने बड़ी छानबीन के बाद एक लम्बी-चौड़ी रिपोर्ट तैयार करके लिंकन के पास भेजी। लिंकन ने उसे उठाकर अलग रख दिया। मंत्रियों ने जब कारण पूछा तो उन्होंने कहा-इसको आदि से अन्त तक पढ़ने के लिये मुझे नया जीवन चाहिये; यदि मैं किसी को घोड़ा खरीदने का काम सौंपूँ तो उसे उचित है कि वह मुझे संक्षेप में उसके गुण-दोष बतला दे, न कि यह कि उसकी दुम में कितने बाल हैं।

कमेटियों में प्रायः छोटी-छोटी अनावश्यक बातों की छानबीन में समय और श्रम का अपव्यय होता है। जब तक उनकी भारी भरकम रिपोर्ट प्रकाशित होती है, तबतक अवसर हाथ से निकल जाता है। अधिकारियों को लिंकन की नीति का अनुसरण करना चाहिये। तत्त्व को ग्रहण करने में बुद्धिमानी है।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला-2

ईश्वर-पूजा का वैदिक स्वरूप

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

आर्य समाज कहता है कि हम भगवान् की उपासना करते हैं। उपासना का अर्थ है कि हम उसके निकट जाते हैं, उप अर्थात् निकट, आसन अर्थात् बैठना। We sit near God (वी सिट नीयर गॉड) हम परमात्मा के पास बैठते हैं। To sit near (टु सिट नीयर), To abide by (टु एबाइड बाई) and to reside in (एण्ड टु रिजाइड इन) यह तीन अर्थ हैं उपासना के। आर्यों की दृष्टि से उपासना का अर्थ यह हुआ कि हम उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, हम ईश्वर में निवास करते हैं और हम ईश्वर के गुणों को धारण करते हैं और इस प्रकार उसके निकट जाते हैं। पास होने का यही अर्थ है। एक लड़का अपने गुरु के पास ही जाता है अर्थात् जो भी उसने पढ़ाया है उसे अपने दिल में रख लेता है। मेज उसके अधिक निकट है परन्तु मेज में ज्ञान को ग्रहण करने की योग्यता नहीं है। कुर्सी भी पास है परन्तु उसमें भी ग्रहण करने की योग्यता नहीं है। परन्तु मेज व कुर्सी से दूर जो बच्चे हैं, उन में ग्रहण करने की योग्यता है। गुरु जो कह रहा है वे उसे समझते हैं, जिनमें समझने की योग्यता नहीं है वह अलग वस्तु है, तो जिन बच्चों ने गुरु के पढ़ाये हुए को अधिक से अधिक ग्रहण किया है वे उस अपेक्षा से उतने ही गुरु के पास हैं। इसलिए आर्य समाजी लोग कहते हैं कि परमात्मा के गुणों को जिसने अधिक से अधिक ले लिया है वह ईश्वर के अधिक पास है और इसी का अर्थ उपासना है। इस उपासना के सम्बन्ध में विस्तार है किन्तु मैंने संक्षेप आपको अभी बताया है। यह आर्य विधि है।

सनातनधर्मी भाई इस सम्बन्ध में पूजा और भक्ति दो शब्दों का अधिक प्रयोग करते हैं। दोनों शब्द संस्कृत के हैं। पूजा शब्द पूज् धातु से बना है। और पूज् का अर्थ सेवा है। पूज् सेवायां, भक्ति शब्द में भज् धातु है, भज् सेवायां, भज् का अर्थ भी सेवा है। दोनों शब्द के अर्थ सेवा के हैं। परन्तु एक बात इससे पहले समझनी आवश्यक है कि तीन पदार्थ हैं-ईश्वर, प्रकृति और जीवात्मा। इस मानचित्र को थोड़ा समझ लीजिए। एक तरफ ईश्वर, बीच में जीवात्मा और दूसरी तरफ प्रकृति। प्रकृति और परमात्मा दोनों पूर्ण हैं। आप कहेंगे कैसे? प्रकृति कहती है, मुझी किसी वस्तु का ज्ञान नहीं है, मैं ज्ञानशून्य हूँ। मुझे न अपना ज्ञान है कि मैं लकड़ी हूँ और न दूसरों के बारे में ज्ञान है कि लोग यहाँ भाषण सुन रहे हैं। इसे दोनों तरह का ज्ञान नहीं है। यह एक प्राकृतिक वस्तु है, प्रकृति के बनी हुई है, Material Object (मैटीरियल ऑब्जेक्ट) है जो Matter या प्रकृति के स्थान पर है जिसे न अपना ज्ञान है, न दूसरे का।

भगवान् क्या कहता है? वह कहता है कि मैं अपने-आपको भी जानता हूँ और अपने से अन्य वस्तुओं को भी जानता हूँ, जो जानने में ईश्वर सब से पूरा और न जानने में प्रकृति सबसे पूरी। हैं ये दोनों पूरे। इन दोनों को किसी अन्य की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर व प्रकृति दोनों आवश्यकता से शून्य हैं।

जीवात्मा को आवश्यकता है। बहुत सी वस्तुएँ उसकी आवश्यकता की हैं। जो जीवात्मा ईश्वर से लाभ उठाता है या यों कहिए कि ईश्वर अपने अस्तित्व को सफल कर रहा है, उसे Useful (यूजफुल) बना रहा है। जीवात्मा परमात्मा के संसर्ग से मुक्ति का लाभ प्राप्त कर सकता है। और दूसरी ओर प्रकृति है। प्रकृति से सुख की सिद्धि करे। प्रकृति की सहायता से वह साधारण सुख से लेकर चक्रवर्ती राज्य तक की प्राप्ति करे। प्रकृति से Material Progress (मैटीरियल प्रोग्रेस) करे और ईश्वर से मुक्ति प्राप्त करे। जीवात्मा इन दोनों वस्तुओं से लाभ उठाता है। यदि जीवात्मा को मध्य से हटा दिया जाये तो दोनों यूजलेस हैं, दोनों निकम्मे हैं। जैसे बाजा, बजाने वाले की अनुपस्थिति में निकम्मा है, किसी काम का नहीं है। बाजा बजाने वाला यदि है तो बाजे का कोई उपयोग हो सकता है। इसलिए प्रत्येक वस्तु अपने वजूद से अन्यों को लाभ पहुँचाकर ही सफल होती है। मैंने अपने कल के व्याख्यान में यही तो कहा था कि भगवान् all knowledge (आल नॉलिज) है सर्वज्ञ है। सर्वज्ञ होने का क्या लाभ यदि उस ज्ञान से अल्पज्ञ लाभ न उठा सकेंगे? उसका लाभ तब ही है जब उससे अल्पज्ञों को लाभ पहुँच जाये, कम जानने वालों को फायदा पहुँच जाए। जहाँ कहीं भी आप देखेंगे यही नियम देखेंगे। एक व्यक्ति गली में खड़े हुए एक खोजी की दृष्टि से देख रहे थे। नये आदमी थे, किसी को ढूँढ रहे थे। कोई बुजुर्ग वहाँ बैठे थे। उन्होंने उनसे पूछा-"कहिए श्रीमान् किसे ढूँढ रहे हैं? आपको किस की खोज है?" उस नवागन्तुक को उन्होंने अपेक्षित जानकारी दे दी। कोई पूछने लगे, "क्यों श्रीमान्, आपको क्या आवश्यकता थी, आपकी क्या कोई रिश्तेदारी थी जो आपने उसे जगह बताई?" नहीं, उसका ज्ञान मांग रहा है, वह परिचित है और जो व्यक्ति वहाँ आए हैं वे अपरिचित हैं। उसके जानने से लाभ यही है कि वह न जानने वालों को उससे परिचित कराये।

जीवात्मा मुक्ति भी प्राप्त कर रहा है और जगत् का सुख भी साथ ही ले रहा है। प्रकृति के द्वारा जीवात्मा संसार में अपनी उन्नति करता जाए। हां, यह बात अवश्य ध्यान में रखनी है कि सुख में अपने कर्तव्य को न भूल जाए और भगवान् से मुक्ति प्राप्त करे क्योंकि वह ज्ञान का भण्डार है और पवित्र है। उस में ये दोनों गुण मौजूद हैं।

मैं सनातनधर्मी भाइयों की भगवान् की पूजा व भक्ति का वर्णन कर रहा था। वे कहते हैं कि हम परमात्मा की सेवा करते हैं, पूजा करते हैं। भगवान् की सेवा के लिए क्या चाहिए, तनिक यह विचारने की बात है। बहुत सीधे सीधे ढंग से सेवक (सेवा करने वाला), सेव्य (जिसकी सेवा की जाए), सेवा (जो क्रिया सेवा के लिए करता है) और सेवा का सामान- ये चार वस्तुएँ होनी आवश्यक हैं। यहाँ जीवात्मा सेवक है, परमात्मा सेव्य है, सेवा की क्रिया और सेवा की सामग्री जो भी उन्होंने (सनातन भाइयों ने) समझ रखी है, इन सब वस्तुओं से वे ईश्वर की पूजा करते हैं।

भगवान् की पूजा करने से पूर्व अब यह पता करना पड़ेगा कि उसकी सेवा कैसे की जाए? भगवान् के लिए हम कौन-सी ऐसी वस्तु लायें जिस की उसे आवश्यकता है? जब उसकी आवश्यकता का हमें ज्ञान हो जाएगा तब ही हम उसकी सेवा कर सकेंगे। इससे पहले नहीं।

मैं जब यहाँ आया तो लोगों ने मुझसे पूछा कि क्या आप चाय पीते हैं? मैंने कहा, "कतई नहीं। मैं चाय नहीं पीता हूँ। चाय कोई पीने की वस्तु है? इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। लोगों ने व्यर्थ चाय पीनी शुरू की। मुझे इतनी उम्र हो गई (८०वर्ष की) कभी आवश्यकता नहीं पड़ी।" मैं तो हँसी में कह दिया करता हूँ कि Water and milk both have been spoiled (वाटर एण्ड मिल्क बोथ हैव बीन स्पॉइल्ड)। दूध और पानी दोनों बिगाड़ दिए हैं। लोग कई बार और लगभग सभी स्थानों पर चाय के लिए पूछते हैं और मैं रोक देता हूँ, तो चाय मेरी आवश्यकता में सम्मिलित नहीं है। क्या मेरी सेवा चाय द्वारा ही हो सकती है? स्पष्ट उत्तर होगा 'नहीं हो सकती'। मेरी इसके द्वारा सेवा नहीं हो सकती। फिर कौन मेरे लिए चाय लाएगा? यदि चाय कोई लाता भी है तो उसका लाना व्यर्थ होगा क्योंकि चाय मेरी आवश्यकता में सम्मिलित नहीं है। विवाह आदि में लोग मुझे बुला लेते हैं तो उनके ढंग बने हुए हैं। एक थाली में सुपारी होती है, इलायची, मिश्री, सौंफ, लौंग आदि होती है और कारतूस भी रखे होते हैं जिन्हें लोग सिगरेट कहते हैं। जब मुझे वह थाली दिखाते हैं तो मैं इलायची ले लेता हूँ। शेष वस्तुएँ या पान-सुपारी व सिगरेट आदि मेरी आवश्यकता में सम्मिलित नहीं है, उन्हें नहीं लेता हूँ क्योंकि मेरी सेवा पान-सुपारी से नहीं की जा सकती।

यदि कोई मनुष्य मेरी सेवा करना चाहेगा तो पहले मेरी आवश्यकता की वस्तु को प[illegible]रेगा। तब मेरी सेवा कर सकेगा। मेरे यहाँ आने पर मेरी आवश्यकता की वस्तुएँ पता की गईं और फिर वैसी ही वस्तुएँ समय पर मेरे लिए आने लगीं। प्रातःकाल दूध आ जाता है। उन सभी सज्जनों का मैं कृतज्ञ हूँ जो मेरे लिए इतना कष्ट उठाते हैं। वे जानते हैं कि रामचन्द्र को प्रातःकाल दूध की आवश्यकता होती है। वह भी पाव या डेढ़ पाव से अधिक नहीं। यदि अधिक होगा तो मुझे हानिकर होगा। मैं जब लोगों के यहां खाना खाने जाता हूँ तो कह देता हूँ कि रहने दो, मुझे अधिक खाना मत दो। यदि अपनी बदनामी करानी है तो दे दो, मुझे पचेगा नहीं। मैं बीमार पड़ जाऊंगा। लोग कारण पूछेंगे तो मुझे बताना पड़ेगा कि अमुक सज्जन के यहां भोजन किया था, उन्होंने अधिक खिला दिया। इसलिए बीमार हो गया, तो इस प्रकार खिलाने वाला भी मेरी सेवा न कर सकेगा। जितना मैं खा सकता हूँ और जो मेरे लिए स्वास्थ्यकर भोजन होगा उसी से मेरी सेवा की जा सकती है।

मैं अम्बाले में वर्मा जी के यहां ठहरा हुआ था। उनके यहां एक और सज्जन भी ठहरे हुए थे। वे चाय पीते थे। नौकर को कुछ जल्दी थी। उसने चाय उस वक्त बनाकर दी जब वे शौच जाने को तैयार हो रहे थे। उन्होंने पूछा-'क्या लाए हो?' नौकर ने उत्तर दिया-'चाय लाया हूँ, आप चाय पीते हैं न।' उन्होंने उत्तर दिया-'हां पीता तो हूँ परन्तु यह समय चाय पीने का नहीं है। मैं तो शौच जा रहा हूं। इससे पता हुआ कि आवश्यकता की चीज भी समय पर दी जानी चाहिए। *(क्रमशः)*

काव्यायन

विजयादशमी

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

वात्याचक्र धूलि के उठे तुरन्त रावण ने,
छोड़े शत-शत शर, काट दिए राम ने।
देव-नाग-किन्नर-गन्धर्व सभी को चकित
विचकित किया लोमहर्षक संग्राम ने।
राघव ने लाघव से रावण का शीश तभी
छिन्न किया किन्तु प्रकटा तुरन्त सामने।
काटे शताधिक शीश बार-बार उगे देख,
मंत्रित ब्रह्मास्त्र ओर ताका फिर राम ने।।

ध्यान कर ब्रह्मबाण छोड़ा तब राघव ने,
क्षुब्ध हुए सिन्धु साद्रि-वसुधा प्रवेपमान।
सिहर फणीश उठे व्योमकेश-विधि-विष्णु,
वायु-गति अवरुद्ध भानु-प्रभा लोपमान।
द्वन्द्व-रथी युद्ध देख स्तंभित-चकित देव
बोले 'राम-रावण के युद्ध का न उपमान'।
तत्क्षण ही राम शर-विद्ध हुआ शत्रु उर
गिरा छिन्न शीश, बीसभुज अद्रि के समान।।

–538क/88, त्रिवेणी नगर, प्रथम, सीतापुर रोड, लखनऊ

तांडव मचाने को जी चाहता है!

❑महेश चन्द्र द्विवेदी

सुनो शत्रुओ, तुम्हारा हृदय नहीं है अब मित्रता के काबिल,
औकात अब तुम्हारी, तुम्हीं को दिखाने को जी चाहता है।

गांधी और गौतम के पुजारी हैं हम,
हमेशा रहा हमको प्यारा हर धरम,
जिहाद के नाम पर जायज है कुकरम,
मिटाना है हमको तुम्हारा यह भरम।

सम्हल कर तुम रहो, खड़े हैं आज हम तुम्हारे मुकाबिल,
और क्रोधित भवानी को खप्पर उठाने को जी चाहता है।

सौहार्द की एक बस हमने चलाई,
सहोदर समझकर मित्रता निभाई,
कृतघ्नता से तुमने छेड़ी लड़ाई,
दम्भकर संसद पर गोली चलाई।

जगा दिया सुप्त-सिंह, भुला दिया इतिहास तूने है अफज़ल,
मराठे शिवा जी का अब बघनख चुभाने को जी चाहता है।

मजहब के नाम पर तुम हमें बांटते,
अपनों सहित तुम सभी को काटते,
अरे आँखों के अंधे, कानों के बहरे,
मंजिल है इक ही, जुदा हों रास्ते।

तुम सुधारे न सुधरे, करना पड़ा हमें पत्थर सा दिल,
भोले शंकर को अब तांडव मचाने को जी चाहता है।।

–'ज्ञान प्रसार संस्थान', 1/137, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

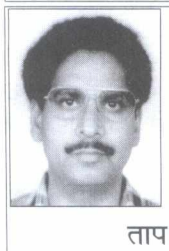

न सहेंगे अब

❑डॉ.कैलाश निगम

ताप द्वेष, दम्भ का प्रचण्ड चढ़ा नाविक को
डूब रही नाव, पतवार को गहेंगे अब।
जाति-वर्ग-धर्म-साम्प्रदाय-नद सम्मुख हैं
राष्ट्रधारा छोड़ इनमें नहीं बहेंगे अब।
सारे षडयंत्र शत्रुओं के करके विफल
टुलमुल नीति की अनीति न सहेंगे अब।
लेना है शपथ, एक हो रहेंगे भारत में
और किसी कोने देशद्रोही न रहेंगे अब।।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

वेद-सूर्य सा आर्य समाज

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

जय जय दयानन्द ऋषिराज!

आर्य लोक में वेद सूर्य-सा,
दमक रहा है आर्य समाज।
वातावरण विषाक्त हुआ था,
फैला था जब जड़ता का तम।
मानवता को ही जकड़े था,
अंधभक्ति को मोहक संभ्रम।
जन-मन को झकझोर जगाया,
नव जागृति के गूँजे साज।।

जय जय दयानन्द ऋषिराज!

पाखण्डी मत का खण्डन कर,
दिखलाया 'सत्यार्थ प्रकाश'।
नारी शिक्षा, पर्व व्यवस्था,
गुरुकुल से विहँसा आकाश।
ढोल फटा अवतारवाद का,
ओम रहा सर्वत्र विराज।।

जय जय दयानन्द ऋषिराज!

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का,
किया तीव्र स्वर से उद्घोष।
हँस-हँस कर पी लिया सुधा सम
विधर्मियों का विषमय रोष।
ज्ञान क्रान्ति का बिगुल बजाया,
रखी राष्ट्रभाषा की लाज।।

जय जय दयानन्द ऋषिराज!

पि.. छायी कालिमा हृदय पर,
हुआ प्रदूषित मनुज आचरण।
आर्य संस्कृति को घेरे है,
पाश्चात्य का छद्म आवरण।
वेद मूर्ति स्वामी वचनामृत,
प्रासंगिक 'विनम्र' है आज।।

जय जय दयानन्द ऋषिराज!

–117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ–22

हर्ष-चतुष्पदी

तहजीब

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

पाया पीछे भूख पर कंट्रोल नहीं,
धैर्य धारण करने की आदत भी नहीं।
आवेश में बह जाना तो है आसान-
मगर भूखे पेट होती है इबादत भी नहीं।।

घाँगरे की जगह देह से चिपकी हैं सलवारें,
कहनेको है वस्त्र असल में नग्नता के नजारे,
श्लील हो या अश्लील तरक्की है सब जगह-
कोई कब तक रहे भला तहजीब के सहारे।।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

आर्य-शक्ति

❑राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी 'आर्य्य' हैं;
विद्या, कला-कौशल्य सबके जो प्रथम आचार्य्य हैं।
वे आर्य्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे;
वे स्वार्थ-रत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।

यह ठीक है, पश्चिम बहुत ही कर रहा उत्कर्ष है,
पर पूर्व-गुरु उसका यही पुरु वृद्ध भारतवर्ष है।
जाकर विवेकानन्द-सम कुछ साधु जन इस देश से-
करते उसे कृत्कृत्य हैं अब भी अतुल उपदेश से।।

यूरोप भी, जो बन रहा है आजकल मार्मिकमना,
यह तो कहे उसके खुदा का पुत्र कब धार्मिक बना?
था हिन्दुओं का शिष्य ईसा, यह पता भी है चला,
ईसाइयों का धर्म भी है बौद्ध साँचे में ढला।।

संसार में जो कुछ यहाँ फैला प्रकाश-विकास है,
इस जाति की ही ज्योति का उसमें प्रधानाभास है।
करते न उन्नति-पथ परिष्कृत आर्य्य जो पहले कहीं,
सन्देह है, तो विश्व में विज्ञान बढ़ता या नहीं।।

है आज पश्चिम में प्रभा जो पूर्व से ही है गई,
हरते अँधेरा यदि न हम होती न खोज नई नई।
इस बात की साक्षी प्रकृति भी है अभी तक सब कहीं,
होता प्रभाकर पूर्व से ही उदित पश्चिम से नहीं।।

अन्तिम प्रभा का है हमारा विक्रमी संवत् यहाँ,
है किन्तु औरों का उदय इतना पुराना भी कहाँ?
ईसा मुहम्मद आदि का जग में न था तब भी पता,
कब की हमारी सभ्यता है, कौन सकता है बता।।

जिसकी प्रभा के सामने रवि-तेज भी फीका पड़ा,
अध्यात्म-विद्या का यहाँ आलोक फैला था बड़ा!
मानस-कमल सबके यहाँ दिन-रात रहते थे खिले।
मानो सभी जन ईश की ज्योतिश्छटा में थे मिले।।

समझा प्रथम किसने जगत् में गूढ़ सृष्टि-महत्व को?
जाना कहो किसने प्रथम जीवन-मरण के तत्त्व को?
आभास ईश्वर-जीव का कैवल्य तक किसने दिया?
सुन लो, प्रतिध्वनि हो रही, यह कार्य आर्य्यों ने किया।।

फैला यहीं से ज्ञान का आलोक सब संसार में,
जागी यहीं थी जग रही जो ज्योति अब संसार में।
इंजील और कुरान आदिक थे न तब संसार में-
हमको मिला था दिव्य वैदिक बोध जब संसार में।।

जिसकी महत्ता का न कोई पा सका है भेद ही,
संसार में प्राचीन सबसे हैं हमारे वेद ही।
प्रभु ने दिया यह ज्ञान हमको सृष्टि के आरम्भ में,
है मूल चित्र पवत्रिता का सभ्यता के स्तम्भ में।।

विख्यात चारों वेद मानो चार सुख के सार हैं,
चारों दिशाओं के हमारे वे जय-ध्वज चार हैं।
वे ज्ञान-गरिमागार हैं, विज्ञान के भण्डार हैं;
वे पुण्य-पारावार हैं, आधार के आधार हैं।।

('भारत-भारती' से सम्पादित अंश-साभार)

मस्तक देकर आज खरीदेंगे हम ज्वाला

❑महादेवी वर्मा

मस्तक देकर आज खरीदेंगे हम ज्वाला!

जो ज्वाला नभ में बिजली है, जिससे रवि-शशि ज्योति जली है,
तारों में बन जाती है, शीतलादायक उजियाला।।

फूलों में जिसकी लाली है, धरती में जो हरियाली है,
जिससे तप-तप कर सागर-जल बनता श्याम घटाओं वाला।।

कृष्ण जिसे वंशी में गाते, राम धनुष-टंकार बनाते,
जिसे बुद्ध ने आँखों में भर, बाँटी थी अमृत की हाला।।

जब ज्वाला से प्राण तर्पेगे, तभी मुक्ति के स्वप्न ढलेंगे,
उसको छू कर मृत साँसें भी, होंगी चिनगारी की माला।।

राजस्थान-समाचार

आर्य समाज ने वितरित की शिक्षण सामग्री

कोटा, २२ सितम्बर। 'आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा राजकीय विद्यालयों में शिक्षण सामग्री वितरण करना प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय कार्य है। आर्य समाज द्वारा इस प्रकार के सेवा कार्य कच्ची बस्तियों में निराश्रित बालगृह, कुष्ठ रोगियों, मजदूरों के बीच आवश्यकता-नुसार सामग्री वितरण करने का कार्य अभिनन्दनीय है। मुझे भी इनके द्वारा आयोजित सेवा कार्यों में जाने का अवसर मिलता रहता है।' उक्त विचार योग भवन के पास स्थित राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय विज्ञान नगर में आर्य समाज जिला सभा द्वारा आयोजित शिक्षण सामग्री वितरण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि स्थानीय पार्षद पवन अग्रवाल ने व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि शिक्षा से ही जीवन में उजियारा होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारी शिक्षा हेतु जालंधर में नारी पाठशाला की स्थापना की। आर्य समाज महावीर नगर के मंत्री राधावल्लभ राठौर ने वेद मंत्रोच्चारण के बाद कार्यक्रम का शुभारंभ किया। आर्य समाज की ओर से कापी, पेन, पेंसिल, रबड़, कटर आदि सामग्री विद्यार्थियों में वितरित की गई। इस अवसर पर विद्यालय की लाइब्रेरी के लिए महर्षि द्वारा रचित अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रधानाचार्या को भेंट किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या इंदुबाला शर्मा ने आर्य समाज का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के अंत में वेदमित्र वैदिक ने शांतिपाठ कराया। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

चतुर्वेद शतकम महायज्ञ एवं श्राद्ध तर्पण

आर्य समाज कुन्हाड़ी, कोटा द्वारा चार दिवसीय चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ, संगीतमय वेदपाठ, वेदोपदेश व जीवित पितृों का श्रद्धा पूर्वक सेवा सम्मान समारोह (श्राद्ध तर्पण) २७ से ३० सितम्बर तक कुन्हाड़ी स्थित थर्मल कालोनी क्लब बिल्डिंग में आयोजित किया गया। प्रतिदिन दोपहर १ बजे से २.३० बजे तक एक एक वेद के सौ-सौ मंत्रों से १६-१६ यजमान जोड़ों ने ४ यज्ञ वेदियों में आहुतियाँ प्रदान कीं। यज्ञ के ब्रह्मा पं.बिरधीलाल शास्त्री रहे। नियमित यज्ञ के उपरान्त उसी वेद के १०० वेदमंत्रों का पद्य रूप में संगीतमय वेदपाठ श्री बल्लभमुनी वानप्रस्थी (छत्तीसगढ़) द्वारा कराया गया, जिसका श्रोताओं ने बड़ा आनन्द लिया। सभी श्रोताओं को बल्लभमुनी वानप्रस्थी द्वारा रचित वेदमंत्रों के पद्यरूप वाली पुस्तकें पढ़ने को प्रदान की गईं। चार दिनों में स्वामी शतानन्द जी सरस्वती के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान होते रहे। अंतिम दिन ३० सितम्बर को नियमित कार्यक्रम के उपरान्त वेदविद्वान श्री शिवनारायण उपाध्याय द्वारा पूर्णिमा सत्संग समिति के सहयोग से रचित 'वैदिक ऋषिकाएं' पुस्तक का विमोचन डीएवी स्कूल की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, डॉ.कमलेश शर्मा व जि.. जज गिरीश अग्रवाल द्वारा किया गया। श्राद्ध तर्पण कार्यक्रम के अन्तर्गत ३१ जीवित पितृों का सेवा सम्मान उनके पैर धोकर, तिलक लगाकर श्रीफल, शॉल आदि भेंट कर किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कोटा उत्तर विधायक प्रहलाद गुंजल रहे। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। *(पी.सी.मित्तल, प्रधान)*

हरियाणा-समाचार

वैदिक यज्ञ-भजन-प्रवचन

झज्जर, १०.०९.१८। महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, भट्टी गेट, झज्जर में वैदिक यज्ञ भजन प्रवचन और अभिनन्दन कार्यक्रम हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ.एच.एस.यादव, पूर्व प्राचार्य राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झज्जर; मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता आर्य नेता आचार्य यशवीर जी बोहर (रोहतक); मुख्य यजमान श्रीमती मामकोर एवं श्री रतीराम आर्य रहे। लगभग ७५ छात्र-छात्राओं ने हाथ के सूक्ष्म व्यायाम का शानदार प्रदर्शन किया। डॉ.एच.एस.यादव ने बताया कि सब बुराइयों का मूल कारण अज्ञानता (असत्यता) के साथ-साथ पर्यावरण के मूल तत्व वायु-जल आदि का विषैला होना है। सत्य प्रमाणों के साथ तार्किक सोच से अज्ञानता दूर होती है। वायु-जल की शुद्धि के लिए वृक्ष लगाना तथा गोघृत-जड़ी-बूटियों से निर्मित सामग्री से हवन करना चाहिए। आचार्य यशवीर आर्य ने कहा कि हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि हम ईशकृपा से आर्य बने। आर्य समाज के लिए सौभाग्य की बात तब होगी जब हमारी वजह से आर्य समाज संगठन उन्नत होगा।

इस अवसर पर आदर्श अध्यापिकाओं श्रीमती सुमित्रा, अनिता, विमला देवी, ने अपने विचार रखे। भजनोपदेशक पं.जयभगवान आर्य के सुमधुर भजन हुए। कार्यक्रम में आर्य समाज झज्जर के प्रधान द्वारकादास, वैदिक सत्संग मण्डल समिति के प्रधान पं.रमेशचन्द्र वैदिक, लाला प्रकाशवीर, सूर्य प्रकाश, श्रीभगवान सिंह, ओमप्रकाश यादव, चमनलाल, रोशनी आर्या, सोनिया आर्या, रामअवतार, प्रदीप शास्त्री, कृष्ण शास्त्री, हरपाल शास्त्री, ब्र.कृष्ण, राजेन्द्र, पनसिंह, महासिंह, आत्मारा, अभिषेक, कार्तिक, मनस्वी, साक्षी, रिमझिम आदि गणमान्य महानुभाव एवं होनहार बच्चे उपस्थित थे। मुकेश आर्य ने सभी का धन्यवाद किया। *(सुभाष आर्य)*

सीतापुर-समाचार

डॉ. गणेश दत्त सारस्वत जयन्ती

सीतापुर, १० सितम्बर। हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ. गणेशदत्त सारस्वत की ८२वीं जयन्ती हिन्दी सभा सीतापुर द्वारा आशीष मिश्र की अध्यक्षता में मनायी गयी। हिन्दी साहित्य के पुरोधा के साहित्यिक अवदान पर भावपूर्ण प्रकाश डाला गया जिसमें डॉ.सरला अवस्थी, राम गोपाल अवस्थी, रमा रमन त्रिवेदी, डॉ.सुनील कुमार सारस्वत (सम्पादक, मानस चंदन एवं डॉ.सारस्वत के सुपुत्र) की सहभागिता रही। इस अवसर पर डॉ.सरला अवस्थी (लखनऊ) को 'सुषमा सारस्वत स्मृति सम्मान' तथा डॉ.वेद प्रकाश आर्य (लखनऊ) को 'डा.गणेशदत्त सारस्वत स्मृति सम्मान' प्रदान किए गए परन्तु डॉ.आर्य अस्वस्थता के कारण कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके।

कार्यक्रम में अरुणेश मिश्र, रविकान्त त्रिवेदी, चन्द्रशेखर शुक्ल चन्द्रेश, राधे श्याम मिश्र, दिनेश मिश्र राही, उमाकान्त द्विवेदी, राजकुमार तिवारी, विनोदिनी रस्तोगी, प्रेम बिहारी, कुंजबिहारी तिवारी, अनिल महेन्द्र, विजय अवस्थी आदि उपस्थित रहे। संचालन महामंत्री रजनीश मिश्र ने किया। *('विनम्र')*

श्री अवधेश शुक्ल का जन्मोत्सव

२८.०८.१८। सीतापुर के जाने माने साहित्य सेवी तथा 'आर्य लोक वार्ता' के सुपरिचित हस्ताक्षर पं.अवधेश शुक्ल का जन्मोत्सव रम्पा टाकीज मार्ग, आचार्य नरेन्द्रदेव चौक के पास श्रीरामजानकी मंदिर प्रेक्षालय में वरिष्ठ साहित्यकार श्री रमा रमण त्रिवेदी की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर कवयित्री शीला पाण्डेय, लखनऊ को सारस्वत सम्मान प्रदान किया गया। इं.गोपाल सागर, कवयित्री विनोदिनी रस्तोगी ने काव्य पाठ किया। समारोह में श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी' की उपस्थिति प्रेरणादायक बनीं।

जन्मोत्सव के उपरान्त काव्य-उत्सव में श्री दिनेश राही, अम्बरीश अम्बर, मनोज दीक्षित, राजकुमार, डॉ.पुष्पा अवस्थी एवं कई अन्य नवोदित रचनाकारों ने काव्यपाठ किया। *(ऋचा दीक्षित)*

फैजाबाद-समाचार

विजयलक्ष्मी अग्रवाल की पुण्य स्मृति

फैजाबाद आर्य समाज के प्रमुख स्तम्भ माने जाने वाले स्व.धर्मेन्द्र अग्रवाल आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती विजयलक्ष्मी अग्रवाल आर्य का निधन १३.०९.१८ को हो गया। आपकी पुण्य स्मृति में शान्ति यज्ञ का आयोजन १६.०९.१८ को उनके आवास पर किया गया जिसमें आर्य समाज सुभाष नगर फैजाबाद के सभी पदाधिकारी एवं सदस्यगण मौजूद थे। 'आर्य लोक वार्ता' की सादर श्रद्धांजलि! *(बाँके बिहारी 'हर्ष')*

ठाण्डा-समाचार

आर्य समाज टाण्डा का 127वाँ वार्षिकोत्सव

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में स्थित आर्य समाज टाण्डा का वार्षिक उत्सव एक ऐसा समारोह है, जो एक विशाल धार्मिक मेले का रूप लेता रहा है; जिसमें प्रदेश के अनेक जनपदों के श्रद्धालु भाग लेते हैं, उनके भोजन, आवास की सुविधा यहाँ उपलब्ध रहती है।

इस वर्ष यह समारोह २० से २३ नवम्बर २०१८ को आयोजित हो रहा है। प्रतिदिन प्रातः ७.३० बजे से ९.०० बजे तक आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय की अध्यक्षता में चतुर्वेद महायज्ञ होगा जिसमें गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के विद्यार्थी मंत्रपाठ करेंगे।

२० नवम्बर को स्वामी आर्यवेश जी ध्वजारोहण करेंगे, जिसकी व्यवस्था डी.ए.वी. एकेडमी के छात्र और छात्राएं करेंगी तथा मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कॉलेज की छात्राएं ध्वजगीत प्रस्तुत करेंगी। इसी दिन अपराह्न २ बजे से श्री चन्द्रगुप्त मौर्य एवं अनूप कुमार मौर्य के संयोजन में बृहद् शोभा यात्रा निकाली जायेगी।

२१ नवम्बर को आचार्य नरेन्द्र शास्त्री की अध्यक्षता में आर्य युवा सम्मेलन होगा तथा रात्रि ७ बजे से १० बजे तक सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन होगा।

२२ नवम्बर को पं.दीनानाथ शास्त्री की अध्यक्षता में शंका-समाधान होगा। अपराह्न २ से ५ बजे तक नारी सशक्तीकरण सम्मेलन श्रीमती स्वदेश मलहोत्रा की अध्यक्षता में होगा जिसमें श्रीमती संजू देवी विधायक मुख्य अतिथि होंगी। सम्मेलन का संचालन श्रीमती अनीता सिंह, प्रधानाचार्या डी.ए.वी.एकेडमी एवं डॉ. प्रशिषा श्रीवास्तव प्रधानाचार्या मिश्रीलाल कन्या इंटर कालेज करेंगी। रात्रि ८ से ११ बजे तक राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रख्यात कवि डॉ.सारस्वत मोहन मनीषी की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन होगा, जिसके संयोजक संजय सत्यार्थी हैं।

२३ नवम्बर को अपराह्न २ से ५ बजे तक वैदिक विद्वान डॉ.ज्वलंत कुमार शास्त्री की अध्यक्षता में वेद सम्मेलन होगा। जरूरतमंद चिन्हित टोकन प्राप्त लोगों को कम्बल वितरण होगा, प्रदीप कुमार वर्मा इस कार्यक्रम का संयोजन करेंगे।

लखनऊ-समाचार

डॉ.मोहनलाल अग्रवाल के जन्म दिवस पर कविगोष्ठी

२४ अगस्त, २०१८ को भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन परिषद के संरक्षक डॉ.मोहन लाल अग्रवाल के जन्म दिवस पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य के संचालन में सम्पन्न कवि गोष्ठी का शुभारम्भ श्री साधुशरण वर्मा के काव्यपाठ से हुआ। तत्पश्चात् श्री गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र', डॉ.वेद प्रकाश आर्य, श्री मृत्युंजय प्रसाद गुप्त, राजेश प्रकाश शर्मा 'आग्नेय', श्री वीरेन्द्र कुमार सक्सेना 'अधीर', श्रीमती रेखा द्विवेदी तथा अन्त में अध्यक्ष श्री महेश चन्द्र द्विवेदी ने अपनी भावपूर्ण कविता सुनाई। संचालक के आग्रह पर डॉ.अग्रवाल ने भी एक रचना प्रस्तुत की। संचालक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने डॉ.मोहनलाल अग्रवाल को उनके जन्मदिवस पर इन पंक्तियों द्वारा बधाई दी-

अधरों पर तैरती मधुर मुस्कान मंद, शान्त करती है उर-उर की विषम ज्वाल।
भारतीय भाषा के प्रतिष्ठापन का ध्येय मिले, शतवर्ष प्राप्त करें एम.एल.अग्रवाल।।

इसके पूर्व कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ के द्वारा हुआ। श्रीमती कान्ति कुमार एवं अक्षय भाई ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

आर्यत्व के प्रतिष्ठापक लाला हरप्रसाद की स्मृति में यज्ञ एवं गोष्ठी

आर्य समाज महावीरगंज (अलीगंज) के सभाकक्ष में आचार्य विद्यासागर फाउण्डेशन, अलीगंज वैदिक सत्संग एवं सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक २३ सितम्बर २०१८ रविवार को यज्ञोपरान्त एक गोष्ठी आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता श्री रामकेश शर्मा ने की। कार्यक्रम के प्रथम सत्र का संचालन श्री नवीन सहगल ने किया। श्री पाल प्रवीण ने शहीदे आजम भगत सिंह व मवाना निवासी अपने बाबाजी लाला हरप्रसाद के विशिष्ट गुणों पर विस्तार से प्रकाश डाला। श्री प्रेममुनि जी, आचार्य विश्वव्रत शास्त्री ने सरदार भगत सिंह के प्रेरणादायक संस्मरण बताये।

द्वितीय सत्र का संचालन श्री सर्वमित्र शास्त्री ने किया। श्री पाल प्रवीण की पुत्रवधू श्रीमती गीतांजलि ने लाला हरप्रसाद जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वे मवाना के बड़े जमींदार ही नहीं थे वरन् उन्होंने अपनी तीन पुत्रियों व तीन पुत्रों को उच्च शिक्षा दी और वे उच्चकोटि के शायर व कवि भी थे। आर्य समाज मवाना के स्तम्भ थे। गीतांजलि ने आचार्य शिरोमणि विद्यासागर दीक्षित के उन अमृत विचारों को सुनाया जिसमें महापुरुषों, पूर्वजों की जन्मतिथियां व पुण्य तिथियां मनाने के लाभों पर प्रकाश डाला है। गोष्ठी के मुख्य वक्ता व विशिष्ट अतिथि श्री उदय खत्री ने भगत सिंह के जीवन पर हृदयस्पर्शी शैली में अपने विचार प्रस्तुत किये व सभी को धन्यवाद दिया।

आर्य समाज चन्द्रनगर का भावी वार्षिकोत्सव

आर्य समाज चन्द्र नगर आलमबाग, लखनऊ का वार्षिक उत्सव दीपावली के शुभ मुहूर्त में बुधवार दिनांक ७ नवम्बर २०१८ को समारोह पूर्वक मनाया जायगा, जिसमें वैदिक विद्वान श्री नरेन्द्र शास्त्री एवं स्वामी योगानन्द सरस्वती पधार रहे हैं। भजनोपदेश के लिए कानपुर से श्री रवीन्द्र आर्य को आमंत्रित किया गया है।

उत्सव प्रातः ७ बजे से लेकर ११.३० तक होगा। तत्पश्चात् ऋषिलंगर (प्रीति भोज) की व्यवस्था की गई है। श्री अरुण विरमानी, प्रधान; विद्यासागर बग्गा, सुनील कुमार पाण्डेय कोषाध्यक्ष एवं संरक्षक श्री रणसिंह ने आर्य जनता से अधिक से अधिक संख्या में सपरिवार भाग लेने का अनुरोध किया है।

लखनऊ-समाचार

वेद ज्ञान की धारा अविरल प्रवाहित

आर्य समाज आदर्श नगर

आर्य समाज, आदर्श नगर, आलमबाग के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह दिनांक ३०, ३१ अगस्त एवं १,२ सितम्बर २०१८ को समारोहपूर्वक आर्य समाज मंदिर में श्री युधिष्ठिर कुमार आहूजा की अध्यक्षता में मनाया गया। विविध कार्यक्रमों का संयोजन श्री रुद्रस्वरूप (मंत्री, आर्य समाज) ने किया तथा सभा का संचालन गुरुग्राम से पधार हुए श्री सतीश निझावन (पूर्व मंत्री, आ.स.), श्री वीरेन्द्र निझावन एवं श्री हरीश निझावन ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री ओम प्रकाश बत्रा (पूर्व प्रधान) की सक्रियता सराहनीय रही।

२ सितम्बर रविवार को मध्याह्न ऋषि लंगर (प्रीतिभोज) की व्यवस्था की गई तथा आगत विद्वज्जनों, अतिथियों को सम्मानित किया गया। प्रतिदिन प्रातःकालीन सभा में वैदिक यज्ञ, भजनोपदेश तथा व्याख्यानों का सिलसिला चलता रहा। सायं कालीन सत्र में ६ बजे से १० बजे तक भजन एवं उपदेशों की अमृतवर्षा होती रही। बड़ी संख्या में जनता ने भजन एवं प्रवचनों से लाभ उठाया तथा मार्गदर्शन प्राप्त किया।

वेद प्रचार सप्ताह में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक प्रवक्ता आचार्य आनन्द पुरुषार्थी का शुभागमन लोगों में नवीन उत्साह करने में सफल रहा, साथ ही आर्य भजनोपदेशक श्री कुलदीप विद्यार्थी (बिजनौर) ने अपने मधुर एवं ओजस्वी गायन से समाँ बाँध दिया।

आर्य समाज इन्दिरा नगर का वार्षिक उत्सव

"वेद ज्ञान मानव मात्र के लिए है, वर्ग विशेष के लिए नहीं। जो वर्ग विशेष के लिए होता है, वह मजहब, मत या रिलीजन कहा जाता है किन्तु जो मानव मात्र के लिए होता है वही धर्म कहा जाता है। विश्व में मानवमात्र के लिए जो ज्ञान है वह वैदिक धर्म है।" तुलनात्मक दृष्टि से अनेक तथाकथित धर्मग्रन्थों की समीक्षा करते हुए उक्त विचार कुरान और बाइबिल के प्रख्यात अध्येता श्री महेन्द्रपाल सिंह आर्य ने यहाँ आर्य समाज इन्दिरा नगर के वार्षिक उत्सव पर व्यक्त किये; जिसे खचाखच भरे हुए सभाकक्ष में लखनऊ के धर्मप्रेमियों ने आदर के साथ सुना और तालियों की गड़गड़ाहट के साथ विद्वान् वक्ता का अभिनन्दन किया।

१२,१३,१४ अक्टूबर २०१८ को सम्पन्न इस उत्सव का समापन १४.१०.१८ को ऋषि लंगर (प्रीतिभोज) के साथ हुआ। उत्सव में प्रतिदिन प्रातःकाल वैदिक यज्ञ, भजन प्रवचन एवं सायंकाल ६ बजे से १० बजे तक जाने माने भजनोपदेशक श्री घनश्याम प्रेमी एवं श्री दयानन्द सत्यार्थी (बिहार) के भजन होते रहे। समस्त कार्यक्रमों की अध्यक्षता आर्य समाज इन्दिरा नगर की प्रधाना श्रीमती कान्ति कुमार ने की तथा संचालन श्री रामेन्द्र कुमार वर्मा, मंत्री आर्य समाज ने किया। *(डोरीलाल आर्य)*

आर्य समाज राजाजीपुरम वार्षिकोत्सव एवं श्राद्धदिवस

आर्य समाज, वेदमंदिर, राजाजीपुरम में वेद प्रचार सप्ताह, वार्षिकोत्सव एवं श्राद्ध दिवस का आयोजन १ अक्टूबर से ७ अक्टूबर के मध्य समारोहपूर्वक किया गया। प्रतिदिन प्रातःकाल प्रभातफेरी के अलावा देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ (संध्या), वेदोपदेश भजन इत्यादि के कार्यक्रम होते रहे। इस अवसर पर आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, आचार्य पं.सन्तोष वेदालंकार तथा पं.प्रताप कुमार साधक के उपदेशों की व्यवस्था की गई। श्री वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल, श्री रामचन्द्र आर्य एवं श्रीमती कमलेश तलवार ने ६,७,८ अक्टूबर को यजमान का आसन ग्रहण किया।

श्राद्धदिवस के अवसर पर आर्य समाज के उपप्रधान वरिष्ठ सभासद श्री विजयमित्र द्विवेदी को सम्मानित किया गया।

आचार्य आनन्द मनीषी का जन्म दिवस

२ अक्टूबर को आर्य समाज के संरक्षक तपोनिष्ठ आचार्य आनन्द मनीषी का जन्मदिवस विशेष रूप में मनाया गया। इस अवसर पर विशेष अतिथि डॉ.वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता) ने आचार्य आनन्द मनीषी के व्यक्तित्व के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला। आपने कहा- आनन्द मनीषी द्वारा आज लखनऊ के बाहर देश के अन्य भागों में भी आर्य समाज राजाजीपुरम की कीर्ति का विस्तार हो रहा है। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने राष्ट्रीय रचनाओं की पुस्तक 'धधकते पृष्ठ' आर्य समाज के प्रधान श्री निरंजन सिंह को भेंट की। प्रधान श्री निरंजन सिंह ने समस्त आगतों का धन्यवाद किया तथा 'धधकते पृष्ठ' की राष्ट्रीय भावनाओं को उद्वेलित करने वाली रचनाओं की सराहना की। राजीव बत्रा मंत्री द्वारा सभी कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक संयोजन किया गया।

सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट

वैदिक धर्म प्रचार, शिक्षा प्रसार एवं समाज सुधार की अलख जगाने के उद्देश्य से कार्यरत सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट द्वारा आर्ष गुरुकुलम जानकीपुरम के कुलपति आचार्य विश्वव्रत शास्त्री की अध्यक्षता एवं संरक्षण में ८ से १६ सितम्बर २०१८ तक नगर के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिन स्थानों पर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, वे हैं-प्रगति मार्ट, ३१७, जानकीपुरम, वेदमंदिर निकट डी ब्लाक, हैदर कैनाल तट, राजाजीपुरम; जानकी विहार कालोनी, मड़ियाँव गाँव, जानकीपुरम; योगाश्रम, एम.एस.१२०, सेक्टर-डी, अलीगंज; प्लाट नं.५, जानकी विहार कालोनी, जानकीपुरम; महाकालेश्वर मंदिर पार्क, सेक्टर ६, विकास नगर; भाऊराव देवरस इंटर कालेज, सेक्टर क्यू, अलीगंज; ४/१५५, सेक्टर-एच, जानकीपुरम। सप्ताह पर्यन्त विविध स्थलों पर श्री देवेन्द्र स्वरूप, डॉ.सत्काम, नवीन सहगल, सन्तोष मिश्र, श्रीमती कविता सहगल, महात्मा प्रेममुनि, शत्रुघ्नलाल मिश्र, चन्द्रभान सिंह, स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती, शिवशंकरलाल वैश्य, आचार्य सन्तोष वेदालंकार एवं डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने अपने विचारों से जनता को लाभान्वित किया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने श्री आर.के.शर्मा के अवास पर आयोजित कार्यक्रम में सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'धधकते पृष्ठ' की रचना का पाठ किया जिसको विशेष सराहना मिली। इसके अलावा श्री नरेन्द्र आर्य, श्रीमती प्रियंका शास्त्री, श्रीमती यशोदा शर्मा, राकेश वर्मा, श्री सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री महेन्द्र सिंह, श्री पाल प्रवीण, श्रीमती तारा सिं ं श्री चन्द्र मुकुट ने अपने भजनों से जनता को रससिक्त किया। सत्यनारायण ट्रस्ट के इन आयोजनों ने क्षेत्र में जन जागृति का संचार किया।

पुण्य क्षेत्र सरयूबाग अयोध्या - आर्यों का नया तीर्थ

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-स्मारक

आर्य समाज के गौरव स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, कुलपति, गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के संरक्षण में कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य (पूर्व कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) जस्टिस एस. एस.कोठारी लोकायुक्त राजस्थान की प्रेरणा एवं पं.दीनानाथ शास्त्री के मार्गदर्शन में सरयूबाग, अयोध्या में जमीन की रजिस्ट्री का कार्य १६.०६.१८ को पूर्ण कर लिया गया है। इस कार्य में श्री नागेन्द्र नाथ शास्त्री, हिमांशु त्रिपाठी, परशुराम पाण्डेय फैजाबाद, आनन्द चौधरी एडवोकेट लखनऊ तथा आचार्य सत्यप्रकाश आर्य बाराबंकी का स्तुत्य योगदान रहा। सबसे अधिक धन्यवाद के पात्र हैं श्री मो.इरफान अन्सारी, जिनके औदार्य और धर्मानुराग से यह शुभ कार्य सम्पन्न हुआ है।

अब आर्य हिन्दू वेदप्रेमी जनता को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि वह मुक्त हस्त से आर्थिक योगदान देकर इतिहास के पृष्ठों पर अपना नाम अंकित कराने हेतु कटिबद्ध हों। सहयोग प्रदान करने हेतु कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य से सम्पर्क करें-मो.न.९११५०७४०५५, ९३३१८६६६१८।

21वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

ऋषि की मान्यताओं के विपरीत कार्य करने वाले आर्य संस्थाओं में प्रवेशाधिकार से वंचित किये जांय

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' की स्थली उदयपुर में श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग में आयोजित ६ से ८ अक्टूबर २०१८ के २१वें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सब कुछ देख सुनकर आत्मसंतोष हुआ, न्यास अपने प्राप्त साधनों से निरन्तर विकासोन्मुख होता हुआ, 'सत्यार्थ प्रकाश' को महर्षि द्वारा प्रमाणित तथा स्वीकृत द्वितीय संस्करण के रक्षार्थ कृत संकल्प है। महर्षि दयानन्द की इच्छा, मान्यता तथा स्पष्ट निर्देश की अवहेलना करते हुए जो लोग दुराग्रह एवं हठपूर्वक उनकी अमर कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' के सर्वथा अप्रचलित प्रथम संस्करण का प्रकाशन, वितरण अथवा उसकी वकालत कर रहे हैं; ऐसे व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा अथवा अन्य आर्य संस्थाओं में प्रवेशाधिकार से वंचित कर देना चाहिए। यह आज के समय का तकाजा है। न्यास सत्यार्थ प्रकाश का आधिक से अधिक प्रकाशन करके उसके प्रचार-प्रसार में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। आर्य जगत् सौभाग्यशाली है कि न्यास को ऐसा कुशल, योग्य, कर्मठ, सम्पन्न, समर्पित, संस्कारों से परिपूर्ण आर्य सेवक प्राप्त है जिसके नाम से आर्य जगत् परिचित है। वह और कोई नहीं आर्य समाज के गौरव पुत्र स्व.ईश्वरीप्रसाद प्रेम (महात्मा प्रेमभिक्षु) के सुपुत्र श्री अशोक आर्य जी हैं। ईश्वर उन्हें दीर्घायु करे, वह शतायु हों, उन्हें तथा ट्रस्ट के सभी सदस्यों को आशीर्वाद।

-आनन्द कुमार आर्य

आर्य समाज शृंगार नगर में शुद्धि संस्कार

दिनांक १५ अगस्त, २०१८ को आर्य समाज शृंगार नगर में एक ३२ वर्षीया ईसाई युवती केरन रैस्कर का शुद्धि-संस्कार करके वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया और नया नाम 'कृति' रखा गया। *(मंत्री, आर्य समाज, शृंगार नगर, लखनऊ)*

विमला भार्गव की पुण्य स्मृति

२३.०८.१८, एस-४, सूर्या पैलेस, सेक्टर-१६, इन्दिरा नगर। श्रीमती विमला भार्गव (पत्नी स्व.कामता प्रसाद भार्गव) का दुखद निधन १६.०८.१८ को हो गया। उनकी पुण्य स्मृति में शान्ति कामना यज्ञ २३.०८.१८ को आयोजित किया गया जिसमें पारिवारिकजनों ने बड़ी संख्या में भाग लिया तथा दिवंगता को यज्ञ में आहुतियाँ देकर श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं। आप अपने पीछे अंजू, अनीता, मंजू, सुनीता पुत्रियां तथा श्री आनन्द भार्गव पुत्र एवं श्रीमती मधु भार्गव पुत्रवधू छोड़ गई हैं। सभी पारिवारिक सदस्यों के साथ ही सुनील, सुभाष, सोनी, प्रभात, वीना इत्यादि यज्ञ में शामिल हुए।

श्रद्धा संकल्पमयी मंजू श्रीवास्तव दिवंगत

श्रद्धा सेवा और संकल्प की प्रतिमूर्ति श्रीमती मंजू श्रीवास्तव (धर्मपत्नी श्री पीयूषकान्त, अध्यक्ष, पतंजलि योग पीठ (पूर्व) लखनऊ) का अनभ्र वज्रपात की तरह आकस्मिक निधन ०८.०६.१८ को हो गया। यद्यपि लम्बे अर्से से उनकी हृदयगति का उपचार चल रहा था किन्तु वे इस तरह अचानक छोड़कर चली जायेंगी, यह किसी को ज्ञात नहीं था। पूर्ण वैदिक विधि से अंत्येष्टि संस्कार योगपीठ के जागरूक सदस्यों के सहयोग से भैंसाकुण्ड शवदाह स्थल पर किया गया। मंजू श्रीवास्तव अपने पीछे दो अविवाहित पुत्रियों को छोड़ गई हैं।

दि. १०.०६.१८ को श्री पीयूषकान्त जी के आवास- ५/१६५, विकास खण्ड, गोमती नगर में ४ बजे सायं शान्ति हवन एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में इस यज्ञ में शताधिक पुरुषों और देवियों ने अतीव श्रद्धापूर्वक भाग लिया तथा दिवंगता देवी को श्रद्धासुमन समर्पित किये। प्रदेश के समाज कल्याण मंत्री श्री रमापति शास्त्री अपना निर्धारित कार्यक्रम छोड़ कर आये तथा यज्ञ में आहुति के साथ ही अपने शोकोद्गार भी व्यक्त किये। श्री गोपाल कृष्ण श्रीवास्तव, जवाहरलाल शाह, डा.बाबूराम, रामस्वरूप (पतंजलि योग पीठ, बाराबंकी), श्रीमती मीना दीक्षित, शशि दीक्षित, श्री अशोक श्रीवास्तव इत्यादि अनेक गण्यमान व्यक्तियों ने मंजू श्रीवास्तव के सद्गुणों की चर्चा की।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निदेशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी. पिंटेक

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।